मनुष्य बनो

BEMAN

सम्पादक

व

प्रकाशक

देवीचरन मीतल

लेखराज नगर,

अलीगढ़।

वार्षिक मूल्य ४)५०

जून १९७२ ई०

दयाल फकीर कृत पुस्तकों की सूची

मानव धर्म प्रकाश हिन्दी	-७५	नाम दान	१-००
आवागवन उर्फ } हिन्दी	१-००	सार का सार भाग १,२	२.७५
जीवन रहस्य } उर्दू	-७५	मानवता युग धर्म	.५०
मनुष्य बनो हिन्दी	-७५	निष्कलंक अवतार हिन्दी	.५०
जगत कल्याण हिन्दी	-७५	मानव कल्याण भाग १,२,३,४,५	५.००
जगत उभार	१-००	गरुण पुराण रहस्य	१.००
आकाशीय रचना	.५०	अद्भुत मोती	.७५
फकीर वचनामृत	.४०	आजादी की कुंजी	.४०
राधास्वामी शताब्दी पर मेरी भेंट		गुरु वन्दना	.६५
भाग १—२	२-२५	कबीरसार शब्द व्याख्या	१.००
कर्मभोग या मौज भाग १ ,२,	१-७५	शिव फकीर पत्रावली	१.२५
५० वर्षीय फकीर अनुभव	.५०	हृदय उद्गार	१.००
संत सतगुरु वक्त	१-५०	अगम वाणी भाग १,२,३ प्रति	१.००
उन्नति मार्ग	-२५	सुरत शब्द योग	१.००
विश्व धर्म भाग १ व २	१-७५	सत सनातन धर्म अथवा—	
गुरु महिमा	१-००	सत मानव धर्म	३.००
अजायब पुरुष	१-००	निर्वाण से परे	१.००
मेरा ८३ वर्षीय अनुभव	१-२५	रचना का भेद	.७५
आदि अन्त	१-२५	बेहद्दी या अपार के परे	१)२५
सारतत्व सचाई और शान्ति	१.००	ईश्वर दर्शन	१)
अगम विकाश	१-००	मेरी धार्मिक खोज	१.२५
सतज्ञान दाता भाग १, २	२·००	अपार के परे	१·२५
ज्ञान योग	१·००	बारहमासा की व्याख्या	२·००

महर्षि शिवव्रतलाल कृत पुस्तकों की सूची

महर्षि शिव की जीवनी उर्दू	५.००	मूर्ति पूजा रहस्य	०.२५
दयाल योग	,, २.५०	सत्य सनातन आर्य धर्म	१.२५
विवेक कल्पद्रुम	१.५०	रहिमन नीति दोहावली	.५०
सफलता के साधन हिन्दी	.५०	योग आसन	.२५
अन्तर्मुखी	.५०	सप्त ऋषि वृतान्त	.७५
मर्म सन्देश	.५०	राजस्थान की ललित ललनायें	१.००
गुप्त रहस्य	१.००	सत्संग के ८ वचन	०.७५
जैन वृतान्त	.७५	पाँच नाम की व्याख्या	१.२५
नवजीवन सुधार	,७५	हितोपदेश	

R.S.

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदः पूर्णात्पूर्ण मदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ।।

❋ मनुष्य बनो ❋

वर्ष २०	अषाढ़ सं० २०२९ वि० जून सन् १९७२	सं० ९/२३६

❋ चेतावनी ❋

सजनी मन चिन्ता नहिं लाना ।।
तेरे घट में तेरा प्रीतम, उसका ध्यान लगाना ।
दुबिधा दुर्मति तज दुचिताई, अन्तर दर्शन पाना ।।
आस भरोसा रहे गुरु चरनन, चंचल चित्त दबाना ।
तिल को उलट दृष्टि घट खोलो, रूप निरखि हरषाना ।।
सुमिरि सुमिरि नित नाम सुरति से, नाम न कभी भुलाना ।
नाम से काज बनेगा पूरा, नाम भक्ति धन खाना ।।
नाम है जोग जुगत जप क्रिया, नाम प्रीति सतज्ञाना ।
एक नाम है सब की कुंजी, नाम में नहिं अलसाना ।।
नाम है सुमिरन नाम भजन है, नाम में गुरु का ध्याना ।
राधास्वामी नाम जो सुमरे प्रानी, नासे भरम अज्ञाना ।।

निवेदन

हमारा अभ्यास

यह सोचने समझने और विचार करने की बात है कि हम २४ घंटे किस बात का अभ्यास करते हैं। केवल दस बीस मिनट को एकान्त में बैठकर साधन कर लिया, इसी से मन की वृतियों को एकाग्र करना इतना सुगम नहीं है जितना हम समझते हैं। जब सारे दिन तो ४२० के विचार पकाते हैं, गलत ढंग से कमाने की सोचते हैं, खान पान में भी स्वादों के वशीभूत होकर उन्हीं के आधीन रहते हैं और हर समय स्वादिष्ट पदार्थों की इच्छा करते रहते हैं तो फिर यह कैसे सम्भव हो सकता है कि हम सुगमता से मन को काबू कर सकेंगे। मन तो अति सूक्ष्म वस्तु है। अभी तक स्थूल पदार्थों से ही बंधा हुआ है फिर मन की सूक्ष्म वृतियों को एकाग्र करना सम्भव प्रतीत नहीं होता। इसलिये जहाँ आप गुरु का बताया हुआ साधन करते हैं वहां यह भी आवश्यक है कि आप बाहरी इन्द्रियों के रूप रस में बंधे न रहें किन्तु अन्तर्मुखी होने की कोशिश करते रहें। हमारा विचार हमेशा यह रहे कि उसमें शुभ भावनायें, शुभ वासनायें ही स्थान पायें। दूसरों को हानि पहुँचाने, कटु बचन कहने, किसी का हृदय दुखाने आदि बातें को दूर करने का सदा प्रयत्न बना रहना चाहिये। शेष फिर

—देवीचरन मीतल

जिन प्रेमी ग्राहकों ने अभी तक 'मनुष्य बनो' का चन्दा नहीं भेजा है वह कृपा करके तुरन्त भेजदें ताकि पत्र के प्रकाशन में बाधा न आये।

—देवीचरन मीतल

* गुरु महिमा *

गुरु चरन कमल में शीश झुका,
दिन रात करूँ सेवा पूजा।

गुरु स्तुति नित्य करूँ मन से,
गुरू सम जानूँ न मैं दूजा ।।१।।

गुरु देव दयाल ने की जो दया,
भव सिन्धु से पार किया मुझको।

नहिं वार रहा नहिं पार रहा,
सब भांति अपार किया मुझको ।।२।।

गुरु दाता दानी अपार महा,
याचक जग जीव हुये सारे।

गुरु अर्थ दिये गुरु धर्म दिये,
गुरु काम मोक्ष देने हारे ।।३।।

गुरु महिमा जानें न ऋषी मुनी,
शिव शारद शेष की पार नहीं।

संसार असार की प्रीति छुटी,
गुरु भक्ति सार कछू सार नहीं ।।४।।

बहु व्रत किये बहु दान दिये,
बहु तीरथ में जाकर भटके।

गुरु चरण कमल से प्रीति नहीं,
जम जाल में सो निशदिन लटके।।५।।

प्राक्कथन

गत बैसाखी के अवसर पर परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज के प्रवचन निर्वाण के विषय पर हुये। उस समय और भी महात्मा, ऊँची श्रेणी के अभ्यासी, साधु, सत्संगी भी पधारे हुये थे। उन प्रवचनों को 'निर्वाण' के नाम से ही प्रकाशित किया है। ऐसी ही महाराज जी की आज्ञा थी और विषय भी ऐसा ही था। यद्यपि सुनने में तो निर्वाण का विषय चाहे कठिन प्रतीत न हो मगर क्रियात्मक रूप से सरल नहीं है। इसकी प्राप्ति के अधिकारी भी थोड़े ही होते हैं। फिर भी इस पुस्तक के बार-बार पढ़ने और विचार करने से निर्वाण अवस्था का बहुत कुछ ज्ञान हो सकता है और भूल भ्रम मिट सकते हैं। क्या आश्चर्य कि किसी का संस्कार जाग उठे और वह निर्वाण प्राप्ति के साधन में लग जाय। इसके अतिरिक्त सामान्य जीवन या व्यवहारिक जीवन के लिये अनेक उपयोगी ऐसी बातें कही गई हैं जिन पर आरूढ़ होने से मनुष्य का जीवन सुखदाई बन सकता है मगर यह सब अमल करने या क्रियात्मक होने का विषय है। बिना किये कुछ हाथ नहीं आता। बातों के पकवान से पेट नहीं भरता। इसलिये यही भावना है कि प्रेमी पाठक इसको पढ़कर अपने जीवन को क्रियात्मक बनाकर सुख शान्ति प्राप्त करने तथा परम पद को प्राप्त करने का प्रयत्न करें।

—देवीचरन मीतल

R. S.

निर्वाण

सत्संग

परमदयाल फकीरचन्दजी महाराज
(मानवता मन्दिर होशियारपुर १३-४-७२ प्रातः)
बैसाखी के अवसर पर

करुणा निधान कृपाल सतगुरु प्रणतपाल महेश्वरम
सत रूप सतपद धाम धुर, सत भाव सत विश्वमभरम् ।।
दे भक्ति शक्ति मुक्ति जुक्ति, तार लीजे दीन को ।
अति कठिन काल कराल माया, जाल बन्धन में पड़े ।।
हम जीव निबल समरथ हीन, सहत है दुख संकट बड़े ।।
नहिं बुद्धि समझ विवेक ज्ञान, न भक्ति ज्ञान की सम्पदा ।
केवल तुम्हारी एक आस, भरोस रहती है सदा ।।
नाम दीजे प्रेम दीजे, दान दीजे भक्ति का ।
राधास्वामी अपना जन समझ कर, दया कीजे सर्वदा ।।

हर एक धर्म सम्प्रदाय के आदमी उस मालिक के आगे प्रार्थना करते हैं । उनके शब्द चाहे कुछ भी हों मगर उनका भाव यह

होता है कि वह मालिक से प्रेम और भक्ति मांगते हैं ताकि उनका जीवन भली प्रकार बीत जाय। मैं भी मालिक का नाम लिया करता था मगर शरणागत था। सन १९०५ ई० में २४ घंटे रोने के बाद मेरा एक दृश्य मुझे महर्षि शिवब्रतलालजी के चरणों में लेगया। उन्होंने मुझे सन्त मत की दीक्षा दी। इस मत की बाणियों में अन्य मत मतान्तरों को काल और माया में बताया गया है और सबको अधूरा कहा गया है और सन्तमत को सब से ऊँचा और पूर्ण बताया गया है। मैं उसका खंडन उस समय सहन नहीं कर सकता था यद्यपि मुझे इस बाणी की समझ नहीं आती थी। दाता दयालजी पर मेरा जो विश्वास था वह अटूट था क्योंकि उनको अवतार मानता था। उस समय प्रण किया था कि जो कुछ मुझको प्राप्त होगा वह संसार को बता जाऊँगा। उसी अपनी वासना या कर्म के आधीन जो कुछ मुझे प्राप्त हुआ वह सत्संगों में वर्णन कर रहा हूँ। और इस वैसाखी के अवसर पर कहना चाहता हूँ। मुझे कोई दावा नहीं कि जो कुछ मैं कह रहा हूँ यह ठीक है। इसलिये मैंने कादरी बाबा, श्री वषिष्ठजी, प्रिंसीपल दिलाराम जी, सन्त हरनामसिंहजी, जी, आनन्दरावजी, सन्त कृपालसिंहजी को बुलाया है। यदि मैं गलती पर हूँ तो यह महापुरुष मेरी गलत समझ को दूर करें ताकि लोग पथ-भ्रष्ट न होजांय।

आज के लिये मैंने 'निर्वाण' का विषय रक्खा है। मैं आज यह बताना चाहता हूँ कि निर्वाण क्या है। जैन, बुद्ध और सनातन धर्म में अन्तिम अवस्था का नाम निर्वाण है। मुसलमानों में भी निजात कहते हैं। मैंने जो आज 'मनुष्य बनो' का चोला पहन कर स्वाँग बना रक्खा है यह मेरे जीवन का निचोड़ है। निर्वाण प्राप्त करने के बाद जिस प्रकार जीवन व्यतीत किया जाता है आज मैं उसका क्रियात्मक रूप या नमूना बन के बैठा हुआ हूं।

निर्वाण का अर्थ है फूंक मार कर उड़ा देना अर्थात् मन के

जितने भाव विचार, रूप रंग हैं उनको समाप्त कर देना ही निर्वाण है। मुझ पर तो दाता दयाल की दया होगई और आप लोगों की कृपा से मैं निर्वाण के रूप को समझ गया मगर अभी तक निर्वाण में मेरी पूरी तरह स्थिति नहीं हुई। अभी तक गिरता रहता हूँ। गिरना क्या है ? मन में कई एक फुरनायें आजाती हैं। कभी कभी तो यह ज्ञान रहता है कि यह सब माया है और कभी मानव चोले में भूल जाता हूं और अपने विचारों को सच मानकर खेल कर जाता हूँ।

निर्वाण क्या है ? यह आत्म अवस्था है। इससे परे एक और अवस्था है। जब से मुझे यह ज्ञात हुआ कि मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रगट होकर हर तरह से सहायता करता है और उनके काम करता है मगर मुझे कोई जानकारी नहीं होती तो मैं आगे जाने के लिये विवश होगया। मेरे अन्दर भी कभी राम, कभी कृष्ण और कभी गुरु प्रगट होते थे। मैं भी उनको सत मानता था। लेकिन अब समझ आगई कि यह जो कुछ या जो रूप किसी के अन्तर प्रगट होता है यह सब उसका अपना ही मन और अपनी ही श्रद्धा विश्वास होता है।

मैंने दर्दे दिल से संसार के हित के लिये यह काम किया है। इन धर्म, पंथों और गद्दी वालों ने संसार को अज्ञान में रख कर मूर्ख बनाया हुआ है और दुनियां का धन लूटा है। उनसे नाक रिगड़-बाई है। लोग कहते हैं कि अन्त समय गुरु आकर ले जाता है। इसी एक बात के प्रभाव में बड़े बड़े डेरे और बड़ी बड़ी गद्दियाँ बन गई और दुनिया विभिन्न धर्म व पंथों में बट गई।

इस बार मैं उज्जैन गया। वहां एक ९० साल की बूढ़ी स्त्री मर गई। मरने से पहिले वह होश में थी। कहने लगी हजूर बाबा सावनसिंहजी आगये। फिर कहने लगी कि बाबा जगतसिंह जी आगये। फिर कहा कि बाबा फकीर प्रकाश में आगये। वह कहते हैं

कि वह देखो कितना सुन्दर बाग है। उसमें एक सुन्दर कुटिया है। तुमको उस कुटिया में लेजाऊँगा। इसके बाद उसने राधास्वामी कहा और प्राण त्याग दिये।

ऐ धार्मिक जगत के लोगो! मैं किसी के विरुद्ध नहीं कह रहा हूँ। जो कुछ कह रहा हूं वह शत प्रतिशत सच है। मैं निबल, अबल और अज्ञानी जीवों के लिये अवतार लेकर आया हूँ। दाता दयालजी की मेरे नाम यह आज्ञा है—

तू तो आया नर देही में, धर फकीर का भेषा।
दुखी जीव को अंग लगा कर, लेजा गुरु के देसा॥
तीन ताप से जीव दुखी हैं, निबल अबल अज्ञानी।
तेरा काम दया का भाई, नाम दान दे दानी॥

मैं तो उस स्त्री के अन्तर गया नहीं और न यह मालूम कि वह कब मरी। यह वह रहस्य है जो न कबीर साहब ने और न किसी दूसरे सन्त ने स्पष्टरूप से खोला है। मैंने इस भेद को क्यों खोला है? यह समय की मांग है। इस रहस्य को पर्दे में रखने का परिणाम यह हुआ कि संसार विभिन्न धर्मपंथों में और गद्दियों में बट गया। और आपस में घृणा, द्वेष और ईर्ष्या पैदा होगई। गद्दियों के लिये मुकदमे बाजी होरही है। तुम लोग सत्संग में आये हो। मैं निर्भय होकर तुमको कहना चाहता हूँ कि निर्वाण क्या है। निर्वाण वह अवस्था है जहां मनुष्य को यह ज्ञान हो जाता है कि मन में उठने वाले जितने भाव विचार हैं, यह वास्तव में हैं नहीं। यह सब माया है। जिस तरह उस बूढी स्त्री के अन्तर जो बाबा फकीर दिखाई पड़ा वह वास्तव में था नहीं मगर उसको भासता था। इसको हिन्दू शास्त्र माया कहते हैं। एक हमारी माया हैं। उससे तो हम निकल सकते हैं। एक भगवान की माया है। सूर्य, चन्द्रमा, तारागण, पृथ्वी आदि यह हमारी माया नहीं है। वेदान्ती कहते हैं कि यह दुनियां है नहीं, यह सूर्य चन्द्रमा आदि हैं नहीं। हम कैसे अन्धे होकर कहदें कि

दुनिया या सूर्य चन्द्रमा आदि नहीं है। हमारे बन्धन का कारण यह दुनियाँ नहीं है किन्तु हमारे मन के भाव विचार हैं तथा मन की वासनायें और उथल पुथल हैं।

शिष्य नवत हैं गुरू को, यह जाने सब कोय।
गुरू नवें जो शिष्य को, बिरला जानें कोय॥

मैं वह गुरू हूं जो तुम लोगों के आगे अपना सिर नवाता हूं क्योंकि तुम्हारी बदौलत मुझे यह ज्ञान हुआ कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता। मनुष्य के अन्तर जो रूप प्रगट होते हैं यह संस्कार हैं। यदि तुम्हारा मन पवित्र है तो यह रूप तुमको पवित्रता की ओर लेजायगा। यदि मन अपवित्र है तो यह तुमको बुराई की ओर लेजायगा। अब मैं अमरीका जारहा हूँ। वहाँ एक संस्था ने मुझे बुलाया है। क्यों? वहां कई आदमियों के अन्तर मेरा रूप प्रगट होता है। वह अचम्भे में हैं। उस संस्था के लगभग २० हजार मेम्बर है। अब किराया वह देंगे और जाऊँगा मैं। वह कहते हैं कि बाबा हमारे अन्तर आता है लेकिन मुझे पता तक नहीं हैं। हो सकता है आप मेरी इस सचाई से सहमत न हों लेकिन मुझे इस बात का कोई दुख नहीं है।

यह जो अन्तर में दृश्य दिखाई पड़ते हैं इनसे हानि भी है और लाभ भी है। मेरा भी तो एक दृश्य ही था जो मैं दातादयालजी के चरणों में गया था। मुझे मालिक से मिलने की तड़प थी। वही तड़प मुझे वहां लेगई। इसलिये तुम्हारा मन ही तुम्हारा साथी है बशर्ते कि तुम्हारे विचार शुद्ध हों।

आप लोगों के अनुभवों से मुझे ज्ञान होगया। अब मेरा साधन क्या है? अब मैं साधन के समय मन के सब रूप रंग छोड़ जाता हूँ, यहां तक कि गुरु के मानव रूप को भी छोड़ जाता हूँ। आगे आता है प्रकाश और शब्द अर्थात पारब्रह्म और शब्द ब्रह्म। लोग राधास्वामी मत को बुरा समझते हैं लेकिन मैं कहता हूँ कि उनकी समझ

में नहीं आया। जिस विभूती ने यह मत चलाया है वह लिखते हैं कि सतगुरु शब्द स्वरूपी दयाल हैं और उनके चरण प्रकाश हैं। बाहर के गुरु की तो यह ड्यूटी है कि जीव को उसकी प्रकृति के अनुसार चलाकर शब्द और प्रकाश में लेजाय। यही सनातन धर्म की शिक्षा है। गायत्री मंत्र और प्राणायाम मत्र का साधन बताया जाता है अर्थात अपने अन्तर प्रकाश को पैदा करना। ऐसी स्थिति में राधास्वामी मत और सनातन धर्म में कोई अन्तर नहीं है।

मेरा मिशन क्या है ? मैं मानव जाति और धर्मों की एकता को आया हूँ। निर्वाण से परे आध्यात्मिक देश है। हमारा आत्मा अजर अमर है। यह स्वयं शब्द और प्रकाश स्वरूप है। जब तक कोई आदमी दसवें द्वार या निर्विकल्प समाधि से परे नहीं जायगा यह निर्वाण प्राप्त नहीं कर सकता। जनरल साहब ने मुझे कहा था कि इस गूढ़ विषय को पबलिक के सामने रख रहे हैं लेकिन पबलिक इसकी अधिकारी नहीं है। मैं कहता हूँ कि दुनियाँ को इस समय इस शिक्षा की आवश्यकता है। इसी शिक्षा से दुनियां का कल्याण होगा। यह समय की मांग है। जब तक शरीर और मन तुम्हारे साथ है उस समय तक तुम वेद मार्ग की शरण लो—शिव सकल्प मस्तु। कल्याणकारी विचारों से तुम्हारा कल्याण होगा। तुम्हारी दुनियां श्रेष्ठ बनेगी। यदि दुनियां श्रेष्ठ बनाना चाहते हो तो मन के मते मत चलो।

मन के मते न चालिये, मन के मते अनेक।
जो मन पर असवार है, सो साधु कोई एक॥

हर एक व्यक्ति को गुरु धारण करना आवश्यक है। लेकिन उस गुरु से सम्बन्ध जोड़ो जो मानसिक विज्ञान (मेंटल साइकोलोजी) का मास्टर हो जो तुम्हारे विचार और तुम्हारी प्रकृति को समझकर तुमको ठीक रास्ता बता सके। मैंने संक्षिप्त और सादा शब्दों में

आपको निर्वाण के बारे मैं बताया है ' पहिले निर्वाण फिर आत्मपद ।
अपने विचारों में न फँसना ही निर्वाण है । मेरी बातों को साधारण
बुद्धि वाला मनुष्य भी समझ सकता है । महर्षि शिबब्रतलाल जी
तथा दूसरे महापुरुषों की बाणी मे तुमको कोई वस्तु ढूँढनी पड़ेगी ।
अर्थात मोती चुनने पड़ेंगे लेकिन मेरे कथन में से आपको कुछ खोजना
नहीं पड़ेगा । मोती निकले हुये पड़े हैं । उठा कर जेब में डाल लो ।
केवल अमल या आचरण करने की आवश्यकता हैं । मैंने इसको
सुगम कर दिया हैं लेकिन कठिनाई तो यह है कि जब इस पर
अमल करना चाहता हूँ तो मेरे भी हाथ पांव डिगमिगाने लगते हैं ।
मैं झूठ नहीं बोलता । मेरे जीवन का मिशन है सचाई । मैंने अपने
जीवन में अपने लिये झूठ नहीं बोला, लेकिन अपने मातहतों के
लिये अवश्य बहुत कुछ किया । इसलिये गुरु बनकर भी मैंने पाखंड
[illegible]ें जगाया कि हां मैं तुम्हारे अन्तर गया था या मैं गया था अमे-
रिका में वहां के लोगों के अन्तर या मैं तुमको तुम्हारे अन्त समय
आकर लेजाऊँगा । यह गलत है मगर गिरता मैं भी रहता हूं । इसका
इलाज है विश्वास और रूप का सहारा । दुनियादारों को कहता
हूँ कि एक रूप बनाओ चाहे राम का, चाहे कृष्ण का, चाहे किसी
देवी देवता का या किसी गुरु का मगर एक का हो । उसका सहारा
लो और अपनी नीयत को शुद्ध रक्खो । इससे तुम्हारा सांसारिक
जीवन श्रेष्ठ बन जायगा जो निर्वाण चाहते हैं उनके लिये है कि
अपने मन से ऊपर प्रकाश और शब्द अर्थात पारब्रह्म और शब्द
ब्रह्म में जाओ ।

मैंने वह काम अपने मान आदर के लिये नहीं किया । यदि मान
की आवश्यकता होती तो मैं भी दूसरे गुरुओं की तरह पर्दा रखता
और आज लाखों करोड़ों का मालिक होता । अब केवल समझदार
लोग ही मुझे पैसा देते हैं । कल मेरे पास एक स्त्री आई । वह
अमीर लोग हैं । कुछ समय हुआ वह मेरे पास पूना में आई । कहने

लगी बाबाजी लड़का नहीं है और कारबार भी फेल होरहा है। मैंने कहा कि एक वस्तु मांगो। उसने लड़का मांगा। उसके लड़का हो गया। अब उनका हजारों रुपये का गवर्नमेंट के साथ झगड़ा चल रहा है। वह ठेकेदार है। किसी कारण उसको रुपये का भुगतान नहीं होरहा। हो सकता है वह ऋणी भी हो। कल वह स्त्री मुझे १०१) रु० देने लगी। मैंने इंकार कर दिया। मैंने सोचा कि यह बेचारे तो इस समय स्वयं ऋणी हैं और कष्ट में हैं। यदि हो सके तो अपने पास से इनको कुछ दे दूँ। उस स्त्री के हठ करने पर केवल उसका मान रखने के लिये एक रुपया ले लिया।

मेरे मिशन का उद्देश है निर्वाण प्राप्त करना। यह ज्ञान से प्राप्त होगा। मन के सम्पूर्ण विचार माया हैं। इनके चक्र में न आना और प्रकाश में चले जाना। 'शिव संकल्प मस्तु' के सिद्धान्त पर चलते हुये किसी धर्म पंथ का ध्यान न रखते हुये इस दुनिया में जीवन विताना यह मेरे जीवन का मिशन है। इसलिये मैंने आज यह चोला पहिना है। तुमको जीवन मिला है। सत्संग में जाकर बात को समझो। अपने मन पर कंट्रोल करो कि जो कुछ कर्म में है वही मिलेगा। तुम्हारे कर्म का कोई बदल नहीं सकता।

दुनिया कहती है कि सन्त रेख पर मेख मार देते हैं। इसको मैं भी जानता हूँ। तुम्हारे विश्वास ने रेख में मेख मारनी है। मेरे पास बहुत से लोग आते हैं। उनके काम हो आते हैं। क्या मैं उनके काम करता हूँ? नहीं। उनका विश्वास काम करता है। इसलिये जिस धर्म या पंथ में हो, यदि रूहानियत (आत्मपद) चाहते हो तो मन के संकल्पों से ऊपर उठ कर अपने अन्तर शब्द और प्रकाश को प्रगट करो।

वशिष्ठजी! बुरा न मानिये। मैं आपको इसलिये प्रेम नहीं करता कि आप एम० ए०, एम० ओ० ऐल हैं: मैं आपको इसलिये प्रेम नहीं करता कि आप विद्वान हैं। मैं आपसे प्रेम करता हूँ इसलिये कि

आप वशिष्ठ वंश में हैं। ऋषि वशिष्ठ की भी यही शिक्षा थी जो मैं दे रहा हूं। योग वाशिष्ठ को पढ़ो। उन्होंने सबको कल्पित कहा है वशिष्ठ जी ! मैंने आप से इसलिये कहा है कि आप प्रचार का कार्य करते हैं। यदि प्रचारक का अपना जीवन अमली है यदि वह अपने आप में सच्चा है तो उसकी रेडीयेशन से लोगों को लाभ पहुँच सकता है। मैंने सन् १९४२ के बाद किसी को नाम दान नहीं दिया। दुनियाँ मेरे पीछे घूमती फिरती है। अपनी कमजोरी को मैं स्वयं जानता हूँ। वशिष्ट जी ! मैंने आप से इसलिये प्रेम किया है कि आप से लोगों को सावित्री के ध्यान का विचार पैदा होगा और कल्याणकारी विचार फैलेंगे। प्रिंसीपल दिलाराम जी आर्यसमाज के नेता हैं। इनसे मैंने इसलिये प्रेम किया है कि यह आर्यसमाज में रहते हुये बजाय दूसरों का खंडन मंडन करने के लोगों का ध्यान गायत्री मंत्र की ओर दिलाया करें। कादरी साहब से इसलिये प्रेम करता हूँ कि वह मुसलमानों के पीर हैं। मुसलमानों में रहते हुये उनके अन्दर से घृणा द्वेष कम करें और नूर (प्रकाश) की ओर उनका ध्यान आकर्षित करें, क्योंकि जब तक हम नूर में नहीं जायँगे हमारा कल्याण नहीं होगा। अब आप लोगों की इच्छा है चाहे अल्लाह का सुमिरन करके अपने अन्तर प्रकाश पैदा करो, चाहे गायत्री मंत्र के साधन से पैदा करो। राम राम, वाह गुरु या किसी और नाम की रट लगाने से कोई लाभ नहीं। लाभ तो तब होगा जब प्रकाश प्रगट हो जायगा। राम राम तो तोते भी जपते रहते हैं।

दाता दयाल ने मेरे नाम एक शब्द में लिखा था—

न अपना नाम रखना तुम न अपना निशाँ रखना।

यहाँ मेरे गुरु भाई पीरेमुगां साहब, सरदार हरनामसिंहजी, श्री प्रेमानन्द जी और श्री आनन्द राव जी आये हैं। धाम की ड्यूटी प्रेमानन्द जी की लगाई गई है। मैंने तो केवल नन्दलाल को चेला

बनाया है। यह बालब्रह्मचारी है। इसकी मां ने मुझे कहा था कि महाराज घर में बहू नहीं है लेकिन मेरी सेवा कोई भी नहीं करता। उस समय नन्दलाल की शादी नहीं हुई थी। मैंने इससे कहा कि नन्दलाल तुम अपनी शादी मत करो और मां की सेवा करो। इसने मेरी आज्ञा मान कर आज तक शादी नहीं की।

मैंने अपने अनुभव के आधार पर निर्वाण को जो समझा वह कहा। हो सकता है कि सन्तों का निर्वाण कोई और हो। लेकिन ऐ महात्माओ ! आपसे यह कहे देता हूँ कि अब सही रास्ते पर आइये। सचाई पसन्द इंसान होने के नाते मैं अपने आपसे सवाल करता हूँ कि तुमको जीवन में क्या मिला। देखो मित्रो ! जीवन में मुझे एक खोज थी और किसी हद तक अब भी है। जिसकी खोज थी उसको मैं राम समझता था। महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज पर मेरा पूर्ण विश्वास था। मैंने उनसे अत्यन्त प्रेम किया। दुनियाँ में मैंने बड़ा आनन्द लिया। ऋद्धि सिद्धि तथा अन्य वस्तुओं की कोई कमी नहीं रही। जब से मुझे ज्ञान हुआ कि मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रगट होकर उनकी तरह तरह से सहायता करता है लेकिन मैं नहीं होता तो मेरी सुरत या तवज्जह पलटा खागई। मुझे विश्वास होगया कि अन्तर में जितने भी विचार भाव आदि पैदा होते हैं यह सब माया है। इसलिये अब मन सम अवस्था में रहता है और मेरी सुरत शब्द और प्रकाश के समुद्र में आनन्द लेती रहती है। अब चित्त हर तरफ से भर गया है। अब कोई काम करने को जी नहीं चाहता।

काम करने का कोई न कोई प्रयोजन होता है। चूंकि समाज को उभारना होता है इसलिये कोई कह देता है कि भले काम करो, कोई कह देता है कि निष्काम कर्म करो। यह सृष्टि भगवान ने बनाई है। मुझे तो पता नहीं लगा कि यह कब से बनी है। किसी और को पता हो तो मुझे नहीं मालूम। मेरी अपनी यह अवस्था है कि दिमाग पर खामोशी छाई रहती है। यह मेरे कर्म, पता नहीं कब तक रहेंगे।

मैं यहाँ सब को क्यों बुलाता हूं ? पबलिक को यह सिद्ध करने के लिये कि हम सब एक हैं। मेरे यहां न कोई हिन्दू है न मुसलमान, न सिक्ख न ईसाई। न कोई समाजी है न सनातनी। मैंने यह चोला आज इसलिये पहिना है कि मेरी रिसर्च का यह परिणाम है। मुझे मालिक का पता लग गया-कि It is a State of Statelessness. It is a State of Conditionlessness..

जब तक हम दुनियां में हैं इंसान बन कर रहना चाहिये। सबको अपना सा जीव जानना चाहिये। यह मेरा मार्ग है।

आप लोगों को धन्यवाद देता हूँ कि आप मेरे बुलावे पर आजाते हैं।

(श्री वशिष्टजी ने कहा कि महाराज ! अब आप आशीर्वाद दीजिये। इस पर परमदयालजी ने कहा)

वशिष्ट ! मैं कौन हूं आशीर्वाद देने वाला ! मेरी तो आँखें खुल गईं। इतना पर्दा रक्खा गया कि भोले भाले जीवों को मूर्ख बनाया गया। सच पूछो तो हम मूर्ख बनने के योग्य भी हैं। अब अमरीका में पुरुष और स्त्रियों के अन्दर मेरा रूप प्रगट होता है लेकिन मुझे पता नहीं होता,मैंने यह सचाई वर्णन करने के लिये ही'मानवता मंदिर' बनवाया है। सारी दुनियाँ मन के चक्र में आई हुई है। बाहर से से किसी के अन्तर न कोई राम आता है न कृष्ण, न बाबा फकीर न कोई और गुरु। यह मनुष्य का या अपने ही मन का खेल है। इसलिये गुरु की महिमा है मगर यह अज्ञान जल्दी जाता नहीं। जिस पर उस मालिक की दया होती है उसका यह अज्ञान दूर होता है। यदि मनुष्य इनको अपने प्रयत्न से दूर करना चाहे तो असम्भव है।

यह क्या खेल है मैं नहीं जानता। इतना जानता हूँ कि यदि मनुष्य का मन सच्चा है और वह सच्चा होकर उस मालिक के आगे प्रार्थना करता है तो वह अवश्य उसका कोई न कोई साधन बना देता है। यह मेरा अनुभव है। मैं झूंठ बोल कर किसी से पैसा लेना जुर्म समझता हूँ। चार दिन का जीवन है। क्या यह धन दौलत किसी के साथ जायगी ?

प्रवचन

परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज

(मानवता मन्दिर होशियारपुर १३-४-७२ सायं)

मैंने जो कुछ कहा वह मेरा अपना अनुभव है। दूसरे महात्माओं ने जो कुछ कहा वह उनका अनुभव होगा या पुस्तकीय ज्ञान होगा, इसका मुझे पता नहीं। मुझे इस बात की चिन्ता नहीं है कि मेरे स्पष्ट वर्णन से मुझे कोई गुरु मानता है या नहीं, मैं तो गुरु कहलाना महापाप समझता हूँ। गुरु नाम है शब्द, प्रकाश और अनुभव का। गुरु एक आदर्श है। संतमत जो मानव जाति को इकट्ठा करने के लिये आया था आज विभिन्न गद्दियों में बट चुका है। दाता दयालजी का एक शब्द है—

क्या है पद निर्वाण, नहीं कुछ समझ में आवे।
कोई करे इस लोक की आशा कोई परलोक बनावे॥
मंत्र पढ़ें संध्या अरु जप तप, देवी देव मनावे।
मन्दिर मूरति की परिक्रमा, बैठ के ध्यान लगावे॥
मन का मतवाला बन देखे, पक्षपात उरझावे।
झगड़ा ठान के करे लड़ाई, भरमे और भरमावे॥
आसन मारे जोग जतन किये, गहरी समाधि में जावे।
जड़ चेतन न गांठ खुले कभी, जब तक रूप बनावे॥
खोज खोज के खोज थके जब, गुरुकी संगत जावे।
राधास्वामी दया रूप लख आवे, सोई निर्वाण कहावे॥

दाता दयाल कहते हैं कि गुरु की संगत में जाने से तुमको इस ज्ञान का पता लगेगा। मैं गुरु की संगत में गया था। उन्होंने मुझे आज्ञा दी थी कि सत्संग कराया करो और नाम दान दिया करो।

तुमको सत्गुरु के दर्शन सत्संगियों के रूप में होंगे। यह बात सन् १९१९ की है।

गुरु बतावें साध को, साध कहें गुरु पूज।
अर्श पर्श के मेल से, बूझी बूझ अबूझ॥

गुरु के पास जाओ तो वह कहते हैं कि संगत की सेवा करो और संगत के पास जाओ तो वह कहते हैं कि गुरु की सेवा करो। दोनों के मेल से जो अनसमझी हुई बात है वह समझ में आ जाती है। दातादयाल जी महाराज तो अब चोला छोड़ चुके हैं। वह कहाँ गये? अब यदि मैं यह कह दूं कि वह ज्योति में समा गये या वह सतलोक को चले गये तो मेरे पास कोई प्रमाण नहीं है। मेरा जीवन अनुभवों पर निर्भर है।

हुजूर बाबा सावनसिंह जी चोला छोड़ गये। इसके बाद कई आदमी यह कहते हैं कि बाबा जी ने उनको साक्षात् दर्शन दिये और बात-चीत की। ऐसी बातों को कभी मैं भी सच माना करता था। अब मेरे तो भ्रम चले गये। अब मैं आप लोगों के भ्रम मिटाना चाहता हूँ। हुजूर महाराज राय सालिगराम साहब की जीवनी उनके लड़के या पोते ने लिखी है। उसमें लिखा है कि एक आदमी मथुरा निवासी हुजूर महाराज के पास नाम लेने के लिये आ रहा था। उसको आगरा पहुंचने पर मालुम हुआ कि महाराज चोला छोड़ गये हैं। उस आदमी को बड़ा शोक हुआ। वह उदास होकर जंगल में फिर रहा था। अचानक देखता है कि आकाश से एक विमान लेकर हुजूर महाराज आये और उसको कहा कि तुम क्यों रो रहे हो। मैं तो पीपल मण्डो में रहता हूँ। वहां जाकर नाम ले लो।

अब जब कोई कहता है कि बाबा फकीर मेरा साइन्स का पर्चा हल करा गया, कोई कहता है मुझे नदी में डूबते हुए बचा गया, कोई कहता है कि मुझे दवा बता गया, कोई कहता है मुझे बच्चा दे गया और मुझे पता नहीं होता है तो फिर वह कौन है जो जाता है?

यह सारा संसार भ्रम और माया के चक्र में आया हुआ है। मेरी बात बहुत ऊँची है। तुम्हारी बुद्धि वहां तक पहुँच नहीं सकती। जब मैं होशियारपुर में जिंदा बैठा हुआ हूँ और मुझे ऐसी घटनाओं का कोई ज्ञान नहीं होता तो ऐसे ही दूसरे महात्माओं को भी पता नहीं होता। महात्मा मेरे सामने मानते हैं कि हम किसी के अन्तर में नहीं जाते लेकिन सचाई प्रगट नहीं करते। क्यों? अपने आडम्बर और अपने मान के लिये या लोगों से धन इकट्ठा करने के लिये। सचाई क्या है? यह कि ऐ इन्सान! यह जितना खेल है यह सब तेरे अपने मन का है। तेरे विश्वास का है। यह सब तेरा अपना ही आत्मा हैं। जिसको अपने रूप का ज्ञान हो गया और वह उस ज्ञान में आरूढ़ हो गया, वह है विदेह पुरुष और यही निर्वाण है। वह दुनियाँ में रहते हुए सारे खेल भी करता है लेकिन उसमें लिप्त नहीं होता।

यदि आपका अन्तःकरण मेरी बात को गलत मानता है तो आप मेरी बात का खण्डन कर जाँय। मुझे कोई अफसोस नहीं। मैं तो, गुरु सेवक हूँ। दातादयाल शिवब्रत लाल जी ने कहा था कि फकीर! धर्म सम्प्रदाय सब बदल जायेंगे। मेरी वर्णन शैली को भी दुनियाँ पसन्द नहीं करेगी। इसलिये चोला छोड़ने से पहिले शिक्षा को बदल देना। गुरु सेवक होने के नाते और अपनी नीयत को साफ रखने के लिये मैंने शिक्षा को बदल दिया है। मैंने इस रहस्य या सचाई को बिल्कुल स्पष्ट कर दिया है। मैंने किसी को नाम नहीं दिया। यह तो मौज की बात है कि बाहर जाता हूँ तो हजारों आदमी मेरे पीछे फिरते हैं। क्या मैं किसी को कुछ देता हूँ या किसी का गुरु हूँ? मैं निर्वाण अवस्था में रहने की कोशिश करता रहता हूँ। वह अवस्था क्या है?

हम बासी उस देश के जहां सत्तपुरुष का बास।

केवल यह सत ज्ञान प्रकट करने के लिये इस शरीर में आया हूँ। ताकि भारतवर्ष और संसार की भावी सन्तान को ज्ञान हो जाय और

वह भिन्न भिन्न गद्दियों में न बट जाय। जो वर्तमान जीव हैं उनको तो तब समझ आयेगी जब रक्तपात होगा और सिर फटेंगे जैसे पूर्वी बंगाल दो जातियों की थ्यौरी से हानि उठाकर अब सैकूलरिज्म की ओर आयेगा।

अब पद निर्वाण क्या है ? दाता दयाल जी ने कहा है कि गुरु की संगत में जाओ। मैं गया था गुरु की संगत में। जो निर्वाण मैंने प्राप्त किया वह मैं कहता हूं। हमारा अपने आप में या अपने स्वरूप में या मालिकेकुल में जो अकह, अपार, अगाध और अनामी है उसके अनुभव में रहने की अवस्था का नाम निर्वाण पद की प्राप्ती है। कबीर साहब अपना अनुभव इस तरह कहते हैं :—

कहूँ उस देश की बतियाँ, जहां नहीं होत दिन रतियां।

मुझे नहीं पता कि कबीर साहब ने किस भाव से यह कहा है कि वहाँ न दिन है न रात है लेकिन मैं यह समझता हूँ जैसे तुम रात को सो जाते हो तो तुमको पता नहीं होता कि अब दिन है या रात है या अब सूरज चढ़ा है या चन्द्रमा, इसी तरह हमारा जो अपना आप है जब वह मन के चक्र को छोड़कर जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरिया या तुरियातीत को भूल जाता है तो उसको न दिन भासता है न रात। अब देखो तुम बैठे हो। तुम्हारे मुंह पर एक चींटी चढ़ जाती है। यदि तुम मन में नहीं होते तो तुमको वह महसूस नहीं होती। यदि तुम मन में होते हो तो इसको तुरन्त हटाने की कोशिश करते हो।

मैंने एक बार बाबा चरनसिंह जी को लिखा था कि दुनियाँ पागल होकर आपके पीछे फिरती है और आप से कुछ चाहती है। आप उनके भ्रम दूर करो। मैं कहता हूँ कि जो कुछ किसी को मिलता है वह उसका अपना विश्वास है। मैं तो हर समय यह कोशिश करता रहता हूं कि दुनियां सचाई और असलियत को समझे।

मैं उस देश में कैसे जाता हूँ। जब से मुझे यह ज्ञान हुआ कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता तो मुझे यह समझ आ गई कि मेरे अन्तर

जितने भाव विचार पैदा होते हैं यह एक फिल्म है। जैसे फिल्म में स्क्रीन पर घोड़े दौड़ते हैं, लड़ाई होती है, लोग नाचते गाते हैं, क्या यह सत्य हैं ? नहीं। यह तो अक्स हैं और यह अक्स हमने पढ़ कर सुनकर या प्रारब्ध कर्म के कारण लिये हुए हैं। निर्वाण का भी हमारे मस्तिष्क में एक स्थान है। जब हमारी सुरत त्रिकुटी के आगे उस स्थान पर जाती है तो फिर वह छेद बन्द हो जाते हैं और देखने वाली जो वस्तु है वह पीछे रह जाती है। यह भी वह संस्कार ही हैं जो मुझ से यह बातें कहला रहे हैं।

कहूँ उस देश की बतियाँ, जहां नहिं होत दिन रतियाँ।
नहिं वहां चन्द्र और तारा, नहीं उजियार अँधियारा ॥
नहिं वहाँ पवन और पानी, गये वह देश जिन जानी ॥

वहां जाने का रास्ता क्या है ? गायत्री मंत्र, ओ३म्, सहस्राकार, ओंकार, रारंगकार सोहंकार और सत्याकार या अन्नमय कोष, प्राण मय कोष, मनोमय कोष, विज्ञानमय कोष और आनन्दमय कोष। जब तक हमारी सुरत इन श्रेणियों से आगे निकल कर ऊपर नहीं जायगी, हम निर्वाण में नहीं जा सकते। यह बातों का पकवान नहीं है। यह क्रियात्मक जीवन से प्राप्त होता है। एक आदमी बीन सुनता है या शब्द सुनता है यदि उसको गुरु ज्ञान मिला हुआ नहीं है तो वह गिर जायगा।

लोग कहते हैं कि काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार को मारो लेकिन मैं कहता हूँ कि यह मर जायेंगे तो तुम जिन्दा नहीं रह सकते। कहने का अभिप्राय यह है कि इनको समता में रक्खो। इनमें लिप्त न हो जाओ। दुनियां कहती है कि बाबा सावन सिंह को क्रोध नहीं आता था क्योंकि सन्तों ने काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार को मारा हुआ होता है। मैं कैसे इसे मानूं ? उनको जब क्रोध आता था तो लोगों को सोटी से मारा करते थे। क्या वह क्रोध नहीं करते थे ? जब तक पिंड, अण्ड और ब्रह्माण्ड से परे नहीं जाते, यह तो रहेंगे ही।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

क्या गद्दी पर आने से सन्तों के बच्चे नहीं होते। यदि उन्होंने काम को मारा हुआ था तो उनके यहां बच्चे कैसे पैदा हो गये? अन्तर केवल इतना है कि एक में कन्ट्रोल है और दूसरे में कन्ट्रोल नहीं है। लोग कहेंगे कि मैं खण्डन कर रहा हूँ। नहीं, यह असलियत है। लोग कहते हैं कि बाबा जी! हमारे पांच चोर निकाल दो। कौन निकालेगा तुम्हारे चोर? जब तक जीवन है, यह तो रहेंगे। हां! अपनी दृष्टि को इन से ऊँची ले जाओ। यह चोर अपने आप समाप्त हो जायेंगे। बसरा बगदाद में मैंने बारह २ घंटे अभ्यास किया लेकिन घर में आकर फिर कामी हो गया। जब मैं वहां बीन सुना करता था तो मेरे मन में अहंकार था कि मैंने मैदान मार लिया। उस समय मैं अधिकतर मस्ती में रहता था। लाहौर आया। दातादयाल जी को माथा टेका। वह मुझे बाहर धूप में ले आये और देखने के यह कहने लगे कि अभी तुम फकीर नहीं बने। केवल योगी ही बने हो। यह सुनकर मेरा सारा घमण्ड टूट गया। मुझे जब उदास देखा तो कहा कि अच्छा कल तुम्हारा इम्तहान लूँगा। मैंने सोचा कि इम्तहान में मुझ से यही पूछेंगे कि तुमने अन्तरीय स्थानों में क्या देखा, मैं सब कुछ बता दूंगा। सुबह को मैंने साग काटा ही था कि दाता दयाल आगये और कहने लगे कि आज हम साग बनायेंगे। चूल्हे में आग जल रही थी। पतीली में घी डालकर चूल्हे पर रख दी और मुझे एक मिनट में पचास हुक्म दे दिये कि पानी लाओ, हल्दी लाओ, नमक लाओ आदि। मैं एक चीज उठाने को दौड़ूँ तो दूसरी चीज लाने का हुक्म मिले, उस ओर दौड़ूँ तो तीसरी का हुक्म मिले। अभिप्राय यह है कि मैं कोई चीज न ला सका। पतीली में घी को आग लग गई। उन्होंने पतीली उठाकर नीचे रख दी और चले गये। कहने लगे अच्छा तुम साग बनाओ।

शाम को जब मैंने कहा कि महाराज! मेरा इम्तहान नहीं हुआ तो कहने लगे कि सुबह साग बनाने के समय हो गया और तुम फेल

हो गये । मैंने कहा कि आपने एक मिनट में पचास हुक्म दे दिये और मैं घबरा गया । कहने लगे, फकीर !

"न घबराना ही फकीरी है ।"

एक आदमी अडोल रहता है । अनुभव और ज्ञान-दृष्टि से वह साधु है या फकीर है चाहे वह साधन करे या न करे । हमको अडोल अवस्था को प्राप्त करना है । इसके प्राप्त करने के भिन्न भिन्न ढग हैं । वह गुरु ही बहतर जानता है कि किस तरह इस जीव को अभय पद प्राप्त हो सकता है । अभय पद ही इष्ट पद है । आप लोगों को निर्वाण के विषय में बता रहा हूँ । जिसको निर्वाण मिल जाता है वह अभय हो जाता है । मेरी भी अब यही अवस्था है मगर मैं अभी तक गिरता रहता हूँ । इसका मुझे दुख है मगर यह मेरे वश की बात नहीं है । जब विचलित होने लगता हूँ तो मुझे याद आ जाता है और मैं संभल जाता हूँ ।

मैंने सारा जीवन इसी खोज में बिताया है कि सन्तों के पास कौन सी ऐसी वस्तु है जो उन्होंने सब को काल और माया मत में बताई और अपने मत को ऊँचा बताया । सच तो यह है कि यह तो वही वेदों का मार्ग है । अभय पद, निर्वैरपना, अडोलपन, अकालपना और निर्द्वन्दपना । बात एक ही है लेकिन मिलती गुरु की दया से है । स्त्री जब दया करती है तो अपना शरीर तुम्हारे अर्पण कर देती है । गुरु जब दया करता है तो कोई बात भी तुमसे छिपाकर नहीं रखता बशर्ते कि शिष्य अधिकारी हो । मैंने निर्वाण का विषय रक्खा है । मैंने जो कुछ कहा है वह मेरे जीवन का अनुभव है और यह मेरी सन्तुष्टि के लिये ठीक है । गुरु ने काम दिया था और मैंने कर दिया । यदि मेरे इस काम से किसी को लाभ पहुँच जाए तो बहुत अच्छा है, मैंने तो अपना कर्म भोगा है । किसी पर कोई अहसान नहीं किया ।

नहिं यहाँ धरनि अकाशा, करे कोई सन्त तहां बासा ।

जिस देश का इन वाणियों में वर्णन है मैं जीवन भर उसको ढढते

ढूंढते थक गया। वह देश क्या है ? जब हमारा आत्मा, मन चित, बुद्धि और अहंकार को छोड़ जाता है तो उस से परे की जो अवस्था है उसमें मग्न हो जाने का नाम है निज स्वरूप अवस्था या आदि अवस्था। हम अपने ही आप यहाँ फँसे हैं और आप ही इस में से निकलना है।

अपने उरझे उरझियाँ, उरझे सब संसार।
अपने सुरझे सुरझियां, यह गुरु ज्ञान विचार ॥

उस अवस्था को प्राप्त करने के लिये पहिले देह से निकलो, फिर मन से निकलो, फिर शब्द और प्रकाश से निकलो। उसके बाद शेष जो वस्तु रह जाती है जो तुम्हारे अन्तर में रहती हुई शब्द को सुनती है, प्रकाश को देखती है और इन की साक्षी है, वह है तुम्हारा निज स्वरूप मगर उसको तुम बातों से प्राप्त नहीं कर सकते। शास्त्रों में गायत्री मन्त्र का अजपा जाप बताया गया है। यह वेदपाठी ब्राह्मण मेरे एक सत्संग में आये थे तो मैंने उनसे कहा कि बिना जिभ्या हिलाये अजपा जाप किया करो। उन्होंने मुझे बताया कि गायत्री मंत्र के अजपा जाप के समय दांत या जुबान नहीं हिलने चाहिये। जो कुछ उन्होंने कहा वह मेरे अनुभव और सन्तों की वाणी से मेल खाता है इसलिये मैंने इस बार उनको यहाँ बुलाया है।

यदि गायत्री मन्त्र के अजपा जाप के समय तुम अपने शरीर को नहीं भूलते तो गायत्री मन्त्र के सुमिरन का कोई लाभ नहीं है। जब तक तुम्हारे ध्यान में कोई न कोई मूर्त्ति आती रहेगी तुम निर्वाण को प्राप्त नहीं कर सकते क्योंकि वह रूप तो तुम्हारे मन ने बनाया है। बाहर से कोई देवी देवता नहीं आते।

मैं शब्द भी सुनता था मगर रूप रंग से मेरा प्रेम नहीं जाता था। यह प्रेम आप लोगों की दया से टूटा। मैं जानता हूँ कि आप लोग इतने ऊँचे ज्ञान के अधिकारी नहीं हो मगर मैं जान बूझ कर इस बात को छेड़ रहा हूँ। मैंने सुबह भी कहा था कि उस दीना नगर

वाले आदमी के अन्तर उसका बाप आया था या देवी ने आकर कहा था कि तुम अपने तीनों लड़कों की बलि दे दो। ऐसे ही किसी के अन्तर बाबा सावनसिंह जी, किसी के अन्तर बाबा फकीर और किसी के अन्तर राम या कृष्ण का रूप प्रगट होता है। यदि मन शुद्ध है तो तुम्हारा मन गुरु बन कर तुमको सीधे रास्ते पर ले जायगा और यदि मन गंदा है तो तुमको बुराई की ओर ले जायगा। इसलिये राधास्वामी मत में किसी पूर्ण जीवित गुरु की आज्ञा के आधीन रहने का आदेश है। कोई मरा हुआ गुरु तुम्हारी सहायता नहीं कर सकता। हां, उनकी वाणी से लाभ उठाओ। मेरे गुरुभाई हरनामसिंह जी कई बार मुझसे सहमत नहीं होते, न सही मगर मैं सचाई से हट नहीं सकता।

जब मैंने यह मन्दिर बनवाना शुरू किया तो उन दिनों एक बार मेरे स्वप्न में दाता दयाल जी और नन्दू भाई जी आये। स्वप्न में दाता दयाल जी ने कहा कि फकीर ! तीन सौ रुपये लाओ मुझे आवश्यकता है। मैंने बक्स में से निकाल कर उनको तीन सौ रुपये दे दिये। आपने कहा फकीर ! मेरा तुम्हारे साथ वायदा था कि मैं इस दुनियां से तब जाऊँगा जब तुम इष्ट पद पर पहुँच जाओगे। अब तुम इष्ट पद पर पहुंच गये हो इसलिये अब मैं जाता हूँ। उन्होंने समाधि लगाई और उनके शरीर में आग लग गई।

जब मैं स्वप्न से जाग्रत में आया तो मैंने समझा कि सचमुच वह दाता दयाल ही होंगे लेकिन उसके बाद वह फिर भी कई बार मेरे स्वप्न में आये इसलिये मेरे स्वप्न के अनुसार यदि वह धाम को चले गये थे तो वह फिर दुबारा मेरे पास कैसे आगये, यह सब भूल और भ्रम है।

जग में प्रगटा परम दयाल, कहता है बाणी सुन्दर रसाल।
भ्रम भूल और माया जाल, जीव फंसे हैं हो बेहाल॥
भ्रम भुलाने भये दीवाने, नहिं समझे क्या है पद दयाल॥

इसलिये मैं इस समय संसार में अवतार लेकर आया हूं और जीवों के भ्रम दूर करने के लिये सत की बाणी कहता हूँ। जो कुछ मैंने स्वप्न में देखा वह मेरे अपने ही आत्मा का खेल था। उस समय मुझे रुपये की आवश्यकता थी। मेरे अपने ही ख्याल ने दाता दयाल के रूप को बनाया। जो कुछ मेरे अनुभव में आया मैंने कहा। किसी की इच्छा सुने न सुने। सिपाही का काम है कमाण्डर की आज्ञा मानना। मैं गुरु सेवक हूँ। ऐ भाई हरनाम सिंह ! आप किसी समय मुझसे सहमत नहीं होते, न सही। आप लोग अपने और काम कोजिये। मैं तो अपना कर्तव्य पूरा कर चला। धाम में दाता दयाल जी का शिष्य काम करता है। दक्षिण में भाई नन्दूसिंह और आनन्द राव जी हैं। कृषक जी ने मुझ से नाम लिया था। वह बूढ़े हो गये हैं। अब जिसका जी च हे आये और काम सम्हाले। मुझे अफसोस नहीं। चार दिन के जीवन के लिये अज्ञान नहीं फैलाना चाहता।

कैसे मानूं कि दाता दयाल स्वप्न में मेरे अन्तर आये। ऋषियों ने इसे छाया पुरुष कहा है और सन्तों ने इसे काल पुरुष कहा है। क्या अन्तर है सन्त मत और सनातन धर्म में ! मैं दाता दयाल का बड़ा प्रेमी था, भावुक था मगर अज्ञानी था। मेरे अज्ञान को दूर करने के लिये उन्होंने मुझे यह काम दिया था। मैं गुरु नहीं हूँ। गुरु ऋण चुकाने को यह काम करता हूँ। यह भी मेरे पिछले जन्म के कर्म हैं। मेरे पास कितने ही जीव आते हैं। मैं लोगों को कह देता हूँ कि जा तेरा काम हो जायगा, यद्यपि मुझे कोई पता नहीं होता कि उसका काम हो जायगा या नहीं लोगों के काम हो जाते हैं और मुझे पिछले जन्म का यश मिलना था वह मिल जाता है।

नहिं तहँ धरनि अकासा, करे कोई सन्त वहाँ बासा।
वहां गम काल की नाहीं, नहीं तहां धूप और छाईं।
न जोगी जोग से ध्यावे. न तपसी देह जरवावे।
सहज में ध्यान से पावे, सुरत का खेल जिहि आवे।

योगी योग को अपने सामने रखकर मन के साथ योग करता है। वह निर्वाण को प्राप्त नहीं कर सकता। तपस्वी भी मन के साथ तपस्या करता है, वह भी निर्वाण को प्राप्त नहीं कर सकता है, जो तवज्जह या सुरत से खेल करता है वह प्राप्त कर सकता है। मुझे अब सुरत का खेल आगया है यद्यपि अभी तक परिपक्व नहीं हुआ है।

सोहंगम नाद नहि भाई। न बाजे शंख शहनाई।
निःअक्षर जाप वहां जापे। उठत धुन सुन्न से आपे।
मन्दिर में दीप बहु बारी। नैन बिन भई अंधियारी।
कबीरा देश है न्यारा। लखे कोई नाम का प्यारा।

नाम क्या है ?

नम रहे चौथे पद माहीं। यह ढूंढे त्रिलोकी मांहीं।

रा म, रा म या रा धा स्वा मी, रा धा स्वा मी यह नाम नहीं है। वह तो अपने आप की एक अवस्था है, उसको प्राप्त करने के लिये सुमिरन करते हुए पहिले देह से निकलना पड़ता है अर्थात् देह का भान नहीं रहता, फिर ध्यान करते करते मन को छोड़ना पड़ता है। फिर उस वस्तु की खोज करनी पढ़ती है जो अन्तर में सब की साक्षी है। यहां तक मेरा अनुभव है आगे मालिक जाने।

मैंने इन महात्माओं के भाषण भी सुने और स्वयं भी बहुत कुछ कहा। अपने आप से सवाल करता हूँ कि तुझे क्या मिल गया इस सम्मेलन से ? यह सब कर्म भोग और माया का जाल है। यह सब को भोगना पड़ता है। जब मैंने इन सन्तों को देखा, किसी को कोई कष्ट, और किसी को कोई कष्ट, तो मेरे दिल में ख्याल आया कि इन संतों ने इतनी तपस्या की और दुनियाँ को रास्ता दिखाया लेकिन उनका क्या परिणाम हुआ ! हम सब लोग यह कहते हैं कि संत सतलोक को चले गये लेकिन क्या प्रमाण है किसी के पास ? केवल विश्वास है। मैंने दुनियां में बहुत दौड़ लगाई। अब अनुभव ने यह सिद्ध किया है कि शरणागतम् में शान्ति है।

मन्दिर वालों को कहे जाता हूँ कि धन एक विष है। इसका अनुचित स्तैमाल मत करना। प्यासे को पानी, भूखे को रोटी दो। नंगे को कपड़ा और दाता दयाल की शिक्षा का प्रचार करो। यह मेरी प्रार्थना है कि सम्प्रदायों ने दुनियां को अज्ञान रूपी अंधेरे में रखकर लोगों को लूटा है। इनका अज्ञान दूर करो, मगर यह अज्ञान जल्दी नहीं जाता। जीव सहारा चाहता है इसलिये कोई न कोई सहारा लेना पड़ता है। इसलिए जहां भी आपका विश्वास है वहाँ रक्खो मगर एक पर विश्वास रक्खो।

आप लोग दूर दूर से आये हैं। आपने मेरे कर्म कटवाने में मेरी सहायता की है। मैं सच्चे हृदय से आप लोगों को आशीर्वाद देता हूँ कि आप लोग सुखी रहो !

सबको शान्ति !

प्रवचन

परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज

(मानवता मन्दिर होशियारपुर १४—४—७२ प्रातः)

मैं अपने आपसे सवाल करता हूँ कि फकीरचन्द ! यह क्या पाखंड का जाल बनाया हुआ है। लोग तुम्हारे पास आते हैं और कहते हैं कि प्रशाद करदो। मैं कर देता हूँ। अब मैं सोचता हूं कि क्या मेरे प्रशाद से किसी को लाभ पहुँचता है ? कम से कम १७५ स्त्रियों को मेरे प्रशाद से बच्चे हुये हैं। उनमें २—३ स्त्रियां तो ऐसी हैं जिनको २०-२० वर्ष से मासिक धर्म भी नहीं होता था लेकिन मेरी लड़की की शादी को १७—१८ वर्ष हो गये उसके कोई बच्चा नहीं है। जब से ऐसी घटनायें मेरे सामने आईं तो मैं सोचता हूं कि तूने क्या किया ?

मुझे बचपन से यह लगन थी कि मेरा मालिक कहां है ? मैं कहाँ से आया हूँ ? और मेरा आदि अन्त क्या है ?

यह विचार मनुष्य के अन्तर क्यों पैदा होते हैं ? जब हम सोचते हैं कि कहां गये महर्षि जी ! कहां गये बाबा सावनसिंह ! कहां गये गाँधी जी ! कहाँ गये राम और कृष्ण ! तो किसी को चाहे यह विचार न आये मगर मेरे दिमाग में यह बात आती है कि यह दुनियां है क्या ?

प्रेमी लीजो रे सुधि घर की, गुरु सग शब्द कमाय।

हुजूर महाराज (राय सालिगराम साहब) भी मेरे जैसे दीवाने थे। उनको भी मेरी तरह यह खोज थी कि मेरा आदि घर कहाँ है। वह कहते हैं कि यदि तुम अपने आदि घर का पता करना चाहते हो तो गुरु के संग बैठकर शब्द की कमाई करो।

मैंने गुरु के साथ बैठकर शब्द कैसे कमाया ? मैं गुरु की संगत में गया था। मुझे अपने घर का पता नहीं लगता था क्योंकि मैं तो मन के चक्र में आया हुआ था।

दातादयाल का रूप मेरे अन्तर आ जाता तो मैं बहुत खुश होता। छोटी उम्र में मेरी यह दशा थी कि राम धनुष लेकर मेरे आगे-आगे चलते थे और कृष्ण बंशी बजाते हुये मेरे आगे-आगे दौड़ा करते थे। मैं उनके पीछे-पीछे दौड़ा करता था। उस समय मैं दीवाना था। फिर दातादयाल महर्षि शिवब्रतलाल जी ने मुझे नाम दिया और आदेश दिया कि अन्तर चलो। मैंने बहुत अभ्यास किया। बीन सुनी, शब्द सुने और इतना प्रकाश देखा कि जिसका कोई हिसाब नहीं। लेकिन जब तक मैं उस अवस्था में रहा और फिर जब नीचे आया अर्थात् उस अवस्था के बाद तो फिर किसी वस्तु की खोज शुरू हुई। अब मुसलमान पीर कादरी साहब यह कहते हैं कि वह नूर या प्रकाश में रहते है, प्रकाश में मुझे देखते हैं। ठीक है मगर क्या उनको सांसारिक आवश्यकतायें तंग नहीं करती हैं।

एक और बात है और क्रियात्मक जीवन बिताना और है। मैंने भी गुरु का संग किया मगर बाद में फिर गिर गया।

दातादयाल जी ने आज्ञा दी कि फकीर ! संतान पैदा करो। क्या मैं सन्तान के लिये स्त्री के पास गया था ? मैं तो काम भोगने को स्त्री के पास गया था। सोचता हूँ कि शब्द के सुनने से मैं क्या बन गया। इसलिये कहता हूँ कि यह महात्मा जो सुरत शब्द योग की शिक्षा देते हैं यह सोचें कि मैं क्या कह रहा हूँ। इस एक ख्याल से कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता मेरा जीवन पलट गया, मेरा दिमाग बदल गया।

गुरु ने मुझे यह ज्ञान दिया कि मैं कौन हूं और कहां से आया हूँ। मैं वहाँ से आया हूं जो कि—

"अकह अपार अगाध अनामी। वह है मेरा देश अकामी ॥"

मैं ही नहीं आप सब लोग वहाँ से आये हो मगर आप लोगों को अपने घर का पता नहीं है। अपने घर का पता गुरु ने बताना है, जो अपने घर जाने के लिये गुरु के पास जाते हैं। तुम लोग तो दुनियावी चीजों के लिये मेरे पास आते हो। दातादयाल ने मुझे लिखा था—

खेल खिलाऊँ सुगम सुहेला, सुरत शब्द मत गाऊँ।
काल हिंडोले से तू बाचे, विधि विचित्र बतलाऊँ ॥

वह क्या विचित्र विधि बतलाई ?

कर सत्संग विवेक से गुरु का, गुरु दयाल हितकारी।
साधू बनके साधले युक्ति, जा भूले से पारी ॥

अभ्यास करते समय मैंने बहुत दृश्य देखे—मानसरोवर, फूल आदि। अब मालूम हुआ कि वह जो कुछ मैंने देखा वह सब माया थी। यह ज्ञान मुझे आप लोगों से मिला। दातादयाल के शब्दों में तो केवल इशारा था।

एक व्यक्ति मेरे पास आकर बहुत रोया। मैंने पूछा कि क्या बात है। उसने बताया कि ८—९ वर्ष हुये मैंने एक गुरु से सुरत शब्द की

दीक्षा ली। अभ्यास करने लग गया और बहुत बहुत दृश्य देखे। एक दिन मैंने एक महात्मा को देखा। उसने कहा कि तू पार जाना चाहता है तो मुझे आकर मिल। मैंने उस महात्मा की बहुत खोज की। व्यास गया, आगरे गया और भी बहुत जगह गया मगर वह महात्मा न मिला। फिर मुझे किसी ने आपके बारे में बताया। आज आपके दर्शन किये। आप वही महात्मा हैं जिनको मैंने अपने अन्तर देखा था।

अब मैं तो उसके अन्तर गया नहीं। जो कुछ उसने अपने अन्तर देखा, वह माया थी। सहसदलकंवल, त्रिकुटी, महासुन्न सब माया है और यही काल है। इससे निकलने को गुरु का सत्संग किया जाता है। मैं इस सचाई को खोले जा रहा हूँ ताकि जो जीव अपने घर जाना चाहते हैं वह इस माया रूपी सांसारिक जीवन में ही न फँसे रहें और अभ्यास के चक्र में ही न पड़े रहें। अपने निज घर पहुँच जांय। यह है संत मत।

साधन भी हर एक आदमी नहीं कर सकता। साधन का अवसर भी प्रालब्ध कर्म के अनुसार मिलता है। यदि मैं अपने प्रालब्ध कर्म के अनुसार गिरता हूँ तो मैं भी वहां नहीं पहुँच सकता। अपने आपका ज्ञान प्राप्त करके उसमें रहना निर्वाण है। चूँकि आम लोग निर्वाण नहीं चाहते इसलिये उनको कर्म काण्ड है। ब्राह्मण पूजा पाठ करते हैं। मूर्ति पूजा करते हैं। मैं किसी को बुरा नहीं कहता। इससे विचार में परिवर्तन आता है। कर्मकाण्ड है क्या? विचारधारा ही तो बदली जाती है। किसी ने मूर्ति से बदल लिया। किसी ने पोथी से बदल लिया। असली कर्मकाण्ड है मन के विचारों को अनुकूल बनाना। शिवसंकल्पमस्तु'। जिस दुनियाँ में हम रहते हैं यह माया देश है। यह सहसदलकंवल, त्रिकुटी, सुन्न महासुन्न क्या हैं? यह सब मन की अवस्थायें हैं। जब मन निर्विकल्प अवस्था में होता है और कुछ सोचता नहीं तो उस समय उसको सुन्न समाधि कहते

हैं। जब वह किसी विचार में लीन होता है तो वह है त्रिकुटी। जब अनेक विचारों में लीन होता है तो उस अवस्था का नाम है सहसदलकंवल।

हम २४ घण्टे माया में रहते हैं। मन कभी एकवाद में रहता है और कभी अनेकवाद में। लेकिन निर्वाण में यह वाद नहीं है। वह तो मन के परे की अवस्था है। तुमने मन को काबू करना है। तुम्हारे विचार के अनुसार ही तुम्हारी विचारधारा होगी। विचार में बड़ी शक्ति है। स्वप्न में भी तुम स्त्री को बनाकर उससे भोग करते हो और तुम्हारा वीर्यपात हो जाता है। यह सब विचार का ही परिणाम है। स्वप्न में तुम बोलने लग जाते हो। डरते हो। तुम्हारे हाथ पाँव काँपने लग जाते हैं। इससे सिद्ध होता है कि मन का सकल्प प्रभाव रखता है। इसलिये ऋषियों ने शिवसंकल्पमस्तु की शिक्षा दी है। अपने विचार को ठीक रक्खो। किसी का बुरा न चाहो। किसी से द्वेष न रक्खो। शिवसंकल्प रखना इस माया देश में लाभप्रद है। चूंकि मन महा चंचल है और ठहरता नहीं, इसलिये इसको ठहराने के लिये सुमिरन ध्यान दिया जाता है ताकि यह अनावश्यक विचार न उठाये। तुमको इसे कुमार्ग से हटाकर सुमार्ग पर लाना है।

तुम शराब पीकर स्त्री भोग करते हो। विचार गंदे हैं। बच्चा पैदा होता है। फिर तुम यह चाहो कि बच्चा बड़ा होकर आज्ञाकारी हो और अच्छे विचार वाला हो तो यह असम्भव है क्योंकि माया देश में संकल्प प्रधान है। इसलिये हिन्दुओं में १६ संस्कार दिये जाते हैं। गर्भाधान भी एक संस्कार है।

मुझे याद है कि जब मैं पहिली बार लाहौर में सुबह ६ बजे से लेकर २ बजे तक दायादयाल का आश्रम ढूँढ़ता रहा और जब मिल गया तो मैंने दरवाजा खटखटाया। अन्दर से दाता जी ने पूछा कि कौन है। उस समय मैं मस्ती था। मैंने कहा—

"प्यारे कुंडरा खोल, फकीरा तेरा बाहर खड़ा ।।"

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

मैं विश्वास के साथ उनके पास गया था कि वह मेरे लिये अवतार लेकर आये हैं। उस समय उन्होंने कहा था कि फकीर ! तुम फकीरों में चाँद बनोगे। उनका उस जो समय का संस्कार था मुझे कामयाब कर गया।

मेरे छोटे भाई का नाम ढेरूमल था। दातादयाल ने कहा कि नाम अच्छा नहीं है। संस्कार ही खराब है। मैंने कहा कि हुजूर इसका नाम बदल दीजिये। सुबह को उसका नाम सुरेन्द्रनाथ रक्खा और कहा कि सुर + इन्द्र + नाथ। तू देवताओं का भी राजा है और उसको कुर्सी पर बिठा दिया। वह विश्वासी था। रायसाहब बन गया और २५००) रु० तनख्वाह लेकर रिटायर हुआ।

माया देश का कानून है शिवसंकल्पमस्तु। इसलिये जो महात्मा यह काम करते हैं उनको कहना चाहता हूँ कि कभी किसी को कमजोर सस्कार न दो। प्रोत्साहन और स्वतन्त्र विचार दो क्योंकि यह माया का देश है। मैंने कल भी बताया था कि मेरे लिये राधास्वामी मत एक नई चीज थी। इसमें समस्त ऋषि मुनियों को अधूरा बताया गया है। राम और कृष्ण को काल का अवतार बताया गया है, संत का अवतार नहीं बताया। मैं यह बाणी सुन नहीं सकता था क्योंकि मुझे अपने सनातन धर्म की टेक थी। उस समय मैंने प्रण किया था कि सच्चा होकर इस रास्ते पर चलूंगा और जो कुछ मेरा अनुभव होगा वह संसार को बता जाऊँगा। मैं जीवन भर तलवार की धार पर चला हूँ। मैं गिरता भी रहता हूँ और संभलता भी रहता हूँ।

इसलिये आज गृहस्थियों को कह रहा हूँ कि हमेशा आशावादी विचार रक्खो। किसी का बुरा मत सोचो। "जो करि है सो भला।" जो भयभीत हो जाते हैं वह Passimistic (निराशावादी) हैं, यह ठीक नहीं है। अच्छी सन्तान पैदा करो। जिस ख्याल को लेकर स्त्री पुरुष का मिलाप होगा, वैसी ही सन्तान पैदा होगी। बच्चों को

ऊँचा ख्याल दो। उनसे घृणा मत करो। उनको गंदा मत कहो, मगर तुम ऐसा कर नहीं सकते। कल एक स्त्री आई और कहने लगी कि बाबाजी मेरा लड़का मेरा कहना नहीं मानता। मैंने कहा कि तुम भी जवान लड़के को कुछ मत कहा करो। कहने लगी कि बाबाजी ! मुझसे रहा नहीं जाता। मैंने कहा कि यदि तू ऐसा नहीं कर सकती तो वह भी कैसे अपने आपको वश में रख सकता है। मुझे अपने लड़के शाह पदमजंग से आज तक कोई शिकायत नहीं हुई क्योंकि मैंने उसको इसी ख्याल से पैदा किया है।

जीवन का उद्देश है दूसरों को सुख पहुँचाना। सबसे पहिले अपनी सन्तान को पालो। मन्दिर, गुरुद्वारे, डेरा धामों को देने से तुम्हारा कल्याण नहीं होगा। गरीबों की सहायता करो। बूढ़े माँ बाप और निर्धन बहिन भाई की सहायता करो। तब तुम्हारा भला होगा। Charity begins at home (दान घर से ही आरम्भ होता है) फिर यदि कुछ बचे तो बाबा फकीर को दो।

क्या कोई महात्मा ऐसी शिक्षा देता है ? इसलिये मैं कहता हूँ कि सन्त सतगुरु वक्त हूँ। यदि हर एक अपने निर्धन भाई बहिन की सहायता करे तो दुनियां से गरीबी दूर हो जाय। अधिकारी लोगों को तो कोई देता नहीं है, अपने नाम के लिये लोग मन्दिर, गुरुद्वारे आदि के लिये दान देकर अपने नाम के पत्थर लगवाते हैं। मैं यह नहीं कहता कि मत दो। दो लेकिन अधिकारी को दो। हम भी यहाँ देते हैं। एक बच्चा यहाँ परवरिश पारहा है आगे पढ़ रहा है। इसकी माँ मर गई। इसके बाप ने दूसरी शादी करली। दूसरी शादी करने को तो तैयार होगया मगर बच्चे के पालने को तैयार नहीं था। इसलिये आज इस शिक्षा की आवश्यकता है। पहिले अपने परिवार को पालो। फिर है सत्संग। यह विश्वास रक्खो कि हम इस दुनियाँ में यात्री हैं। कोई १० वर्ष को कोई २० वर्ष को, कोई ५० या १०० वर्ष को आया है।

मेरी स्त्री २॥ वर्ष बीमार रही। मैं कुटुम्ब के उन लोगों की सहायता करता हूं जो मेरी स्त्री की बीमारी के समय कभी नहीं आये। वह मर गई, तब भी नहीं आये। उसके क्रिया कर्म पर भी नहीं आये और न उन्होंने कभी किसी तरह की सहायता की।

यदि निर्वाण चाहते हो तो शब्दब्रह्म को पकड़ो और दुनियां में यात्री की तरह रहो। गृहस्थियों के लिये है वेद मार्ग। जीओ और जीने दो। एक दूसरे के काम आओ।

देखो प्रेमानन्द ? दाता दयालजी के साथ हमारा सब का प्रेम था। वह चले गये। उनका स्थान उजड़ गया। मैंने जो कुछ हो सका धाम के लिये किया। अब यह ड्यूटी तुम्हारे सुपुर्द करता हूँ कि धाम में उनकी यादगार कायम रहे। वहाँ काम करते रहना। यह चोगा तुमको पहिनने के लिये देता हूँ और यह आसन देता हूँ। इस पर बैठ कर अभ्यास किया करना। हैदराबाद दक्षिण में नन्दू भाई और आनन्दराव भी हैं। हरियाना में सन्त ताराचन्द हैं। उत्तर प्रदेश में तुमको आचार्य नियत करता हूँ। और मुसलमानों में कादरी बाबा को आचार्य नियत करता हूँ। मैं चाहता हूं कि मानव जाति में एकता हो।

सत्संग

(१४—४—७२ सायंकाल)

आज वैसाखी का अन्तिम सत्संग है। तुम लोग जा रहे हो। आज सुबह आर्ती पढ़ी गई। उसका अर्थ बताना चाहता हूँ। जो आदमी मेरे पास परमार्थ के लिये आये हैं उनको यह समझाना चाहता हूँ कि दृढ़ विश्वास क्या है। यदि मेरा यह कथन किसी की समझ में आ जाय तो फिर उसको जीवन भर कोई परिश्रम करने की आवश्यकता नहीं है।

तेरी दया का दृढ़ विश्वास हुआ ।
चरणों में पड़ा, निज दास हुआ ॥
करूँ विनती दोऊ कर जोरी ।
अर्ज सुनो राधास्वामी मोरी ॥

दुनियां चाहती है कि हमको संसार न व्यापे । तुम लाख कोसिश करो लेकिन मन कुछ न कुछ सोचता ही रहेगा । यह संसार से उदासीन कैसे होगा ! यदि किसी जगह पर मनुष्य का विश्वास बैठ जाय और गुरु आज्ञा के अनुसार मनुष्य की तवज्जह या ध्यान मालिक की ओर लग जाय तो मन स्वयं ही संसार की ओर से उदास हो जायगा । वह हर एक वस्तु को मौज के हवाले कर देगा । जो होता है वह होता रहेगा । वह समझ जायगा कि इसमें मेरा कुछ नहीं है मगर उसका मन नहीं छूटता । जो लोग मालिक को दुनियां की वस्तुओं की प्राप्ति के लिये याद करते हैं जो गुरु को या ईश्वर को अपनी सांसारिक इच्छाओं की पूर्त्ति को अपना साधन बनाते हैं उनका तो संसार बढ़ जायगा ।

मैं जो कुछ सत्संग में कहना चाहता था वह कह न सका । क्यों ? क्योंकि दुनियां सुनने को तैयार नहीं है । सन्तों और फकीरों में भी श्रेणियां होती हैं । एक फनाफिल शेख होता है, एक फनाफिल खुदा या फनाफिल अल्लाह या फनाफिल रसूल होता है और एक फनाफिल जात होता है । ऊँची श्रेणी के संत और फकीर फनाफिल जात होते हैं । सन्त ताराचन्द अभी तक फिनाफिल शेख या फनाफिल खुदा है । वह बाबा फकीर को इसलिये याद करता है कि अमुक आदमी का लड़का स्वस्थ हो जाय या अमुक आदमी एलैक्शन में जीत जाय । चूँकि उसने अपने आपको फकीर के सुपुर्द किया हुआ है इसलिये वह जब भी उसको याद करेगा उसके काम स्वाभाविक ही पूरे हो जायेंगे । ऊँचे सन्त और फकीर उस जात (निज स्वरूप) पर

मैंने राधास्वामी मत को समझने में आयु खोदी। मैंने प्रण किया था कि जो कुछ मुझे इस रास्ते पर चलने से मिलेगा वह संसार को बता जाऊँगा। इसलिये आज कहता हूँ कि कि जो कुछ राधास्वामी दयाल ने या दूसरे उच्चकोटि के सन्तों ने कहा है वह बिल्कुल ठीक है।

सन्तों ने इस सृष्टि के पैदा करने वाले को काल कहा है और जालिम कहा है। क्यों ? वह भी ऐसा ही पुरुष है जैसे हम हैं। वह बड़े नमूने का है और हम छोटे नमूने के हैं। जैसे अपनी वासना से हम सन्तान उत्पन्न करते है वैसे ही अपनी वासना से वह संसार को पैदा करता है। हम में मैं' पना है इसलिये हम दुख सुख उठाते हैं और वह भी दुख उठाता है। दुख न उठाता होता तो वह राम या कृष्ण बनकर दुनियां के दुख दूर करने को क्यों अवतार लेता। चूँकि इस माया देश में सुख नहीं है इसलिये सन्त कहते हैं कि इस माया देश से निकल चलो। मेरा अपना जीवन दुख भरा है। मैं समझता हूँ कि मेरे प्रालब्ध कर्म खोटे हैं जो मुझे यह काम करना पड़ा है। जो भी मेरे पास आता है रोता ही आता है। तरह-तरह के दुख आते हैं और मुझे उनके दुखों का अहसास होता है। यदि मैं अहसास नहीं करता तो अपनी ड्यूटी पूरी नहीं कर सकता। जब उनके दुख का मेरे दिमाग पर असर पड़ता है तो मेरे दिल में उनके लिये दर्द पैदा होता है। लेकिन दूसरे आदमी इसकी परवाह नहीं करते। सन्तों का आधार वह है कि जो कोई इच्छा नहीं करता। न वह मरता है न वह जन्मता है। वह है निज स्वरूप (जात)।

बैटरी में एक तो करेन्ट होती है जो बैटरी से निकलकर फिर उसमें लौट आती है और एक वह चीज है जो उसकी रुकावट को दूर करती है और एक है E. M. F. (इलैक्ट्रिक मोटर फोर्स) जिसको वौल्टेज कहते हैं। वह जो ई० एम० एफ० है वह है स्त्रोत। यह जितनी सृष्टि है उसके जीवन स्त्रोत को सन्त मालिक मानते हैं। पहिले मैं भी संसार के पैदा करने वाले को मालिक मानता था।

दातादयाल जी को ईश्वर मानता रहा लेकिन जब से मुझे यह ज्ञात हुआ कि मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रगट होकर उनके अनेक प्रकार के काम करता है और मुझे कोई जानकारी नहीं होती तो मुझे असलियत का ज्ञान हो गया।

आज सुबह महात्मा ताराचन्द के भाषण को लोगों ने बहुत पसन्द किया। क्यों? क्योंकि वह दुनियां वालों की लैविल का है इसलिये दुनियां के लिये यह ठीक है कि राम या कृष्ण या गुरु की पूजा करो ताकि वह प्रगट होकर तुम्हारे सांसारिक कार्य पूरे करदे। मैं इसका खंडन नहीं करता मगर सन्तों का यह मत नहीं है। वह फनाफिल ज़ात (अपने निज स्वरूप में लय) होते हैं। मुसलमानों में कहते हैं—'लाइला इलइल्लाह मुहम्मद रसूल अल्लाह' अर्थात् सिवाय अल्लाह के और कुछ नहीं। लेकिन मैं कैसे मानूँ? क्योंकि दुनियां में तो जहां रहमान है वहाँ शैतान भी है। 'लाइला इलइल्लाह' तो दुनियां में नहीं है वह तो ऊपर है और ऊपर पहुँचने के लिये हजरत मुर्शिद रसूल अल्लाह है। पूर्ण गुरु मनुष्य की सुरत को इस दुनियां की द्वन्द अवस्थाओं से निकालकर निज स्वरूप की ओर ले जाता है।

बलवीरसिंह! तुम भूपाल से आये हो। तुम चाहते हो कि मैं तुमको कुछ दूँ। जो कुछ मेरे पास है वह तो मैं दर्देदिल से तुमको दे रहा हूं। तुम दुनियांदार हो। बाल बच्चे वाले हो गृहस्थी हो। यदि तुम यह चाहो कि एक मिनट में आकाश पर पहुँच जाऊँ तो यह बहुत कठिन है। तुमको क्या कहूँ मेरे जैसा आदमी गिरता रहता है।

राधास्वामी मत की पोथियों में जहाँ भी राधास्वामी का वर्णन है वहाँ लिखा हुआ है राधास्वामी मालिकेकुल और यही सन्तों का मत है। सन्तों का मत है इस नाशवान जगत से हमेशा के लिये

जैसे मुसलमान भाई आवागवन को नहीं मानते है तो उनको चाहिये कि वह इस खुदा को जो इस दुनियां का पैदा करने वाला है छोड़कर 'लाइला इल इल्लाह' को मानें क्योंकि वह तो ज़ात (निज स्वरूप) है। वह यहां नहीं है और उसके सिवाय और कोई नहीं है। निज स्वरूप में तो न खालिक है न मखलूक है और न खलकत है। बाणी में लिखा है :—

नहिं खालिक मखलूक न खलकत।
करता कारण काज न दिक्कत॥
राम रहीम करीम न केशो।
कुछ नहिं कुछ नहिं था सो॥
जो कुछ था अब कह भाखों।
उनमुन सुन विस्माधि राखों॥
हैरत हैरत हैरत होई।
हैरत रूप धरा इक सोई॥

गुरु यह कभी नहीं कहता कि मुझे पूजो लेकिन आजकल तो गुरु अपने आपको पुजवाते हैं। मैं अपने आपको नहीं पुजवाता।

ऐ बलवीरसिंह ! तुम उसको मानो जो एक मात्र निज स्वरूप है जो राधास्वामी दयाल है, जो अकाल पुरुष है और जो अनामी है। जिसको सत्संग द्वारा उस अनामी की समझ आ जाती है और उस पर विश्वास आ जाता है तो उस पर गुरु दया करता है। किस तरह ? जो कुछ गुरु के पास होता है वह शिष्य को दे देता है। वह जो गुरु को अपने शिष्य को समझाना है उसका नाम है—"तेरी दया का दृढ़ विश्वास हुआ, बाहर का गुरु दया करके ज्ञान देकर बात को समझा देता है फिर उसका ध्यान (सुरत) निज स्वरूप की ओर रहता है और दुनियां की ओर से स्वयं ही उदासी आ जाती है।

करूँ बीनती दोऊ कर जोड़ी।
अर्ज सुनो राधास्वामी मोरी॥ संसार से सहज उदास हुआ॥

संसार से उदासीनता गुरु ज्ञान से आती है। जो आदमी गुरु की बात को समझ जाता है, उसका चित्त संसार से उदास हो जाता है। दूसरो का नहीं।

सत्त पुरुष तुम सतगुरु दाता।
सब जीवों के पितु और माता॥
ढारस बँधी घट में उजास हुआ॥

ढारस का अर्थ है सहारा। सत्संग में जब सतपद या असलियत का पता लग जाता है तो आदमी को साहस मिल जाता है। फिर वह दुनिया में रहता हुआ अकेला रहता है।

दया धार अपना कर लीजे।
काल जाल से न्यारा कीजे॥
तब समझूंगा माया का नाश हुआ॥

माया है गुण। 'मा' का अर्थ मापना और 'या' का अर्थ यंत्र। जिस यंत्र से किसी वस्तु की माप की जाती हैं उसका नाम है माया अर्थात् बुद्धि। जब आत्मस्वरूपी प्रकाश इस शरीर में आता है तो एक प्रकार की सनसनाहट पैदा होती है। उसका नाम है माया। कहीं वह कारण रूप में है कहीं स्थूल रूप में है और कहीं सूक्ष्मरूप में है।

इस ऊपर की कड़ी में अपने सत्गुरु से प्रार्थना की गई है कि दया करके मुझे अपना प्रेमी बनालो। एक बादशाह किसी निर्धन को अपना प्रेमी बनाले तो क्या निर्धन को कोई कमी रह जायगी? नहीं। ऐसे ही यदि कोई सच्चा संत या फकीर जो फिनाफिल जात है और जो सचमुच सच्चा बादशाह है यदि किसी को अपना प्रेमी बनाले तो फिर उसको क्या कमी है, अर्थात् उसके ज्ञान देने और बात समझा देने से उसकी माया के गुण समाप्त हो जायेंगे और वह बेफिक्र, बेगम और अडोल अवस्था में आजायेगा। महात्मा ताराचन्द अभी तक माया में हैं और अभी वह माया से निकल भी नहीं सकते।

यदि वह सच्चे रहे और मान प्रतिष्ठा में न आये तो निकल जायेंगे अन्यथा पीर ही बने रहेंगे। अभी निकलने का समय नहीं आया। जब ज्ञान हो जायगा तब निकलेंगे।

सतयुग, त्रेता, द्वापर बीता।
काहु न जानी शब्द की रीता॥

सब में अज्ञान का बास हुआ।

जिसको निज स्वरूप का ज्ञान नहीं है वह तो रूप में ही फँसेगा, जिस तरह ताराचन्द फँसा हुआ हैं। अब लोग इसका सम्मान करते हैं और मैं उसको अपना गुरु मानता हूँ। ऐसे आदमियों की बदौलत ही मुझे अपने आदि घर का पता लगा। तुम सांसारिक इच्छाओं के पीछे फिरते हो इसलिये तुम ऊँची बात को समझ नहीं सकते। यह जो गूढ़ ज्ञान है यह था तो पहिले भी मगर यह गुप्त था। जिस तरह मैंने जो रहस्य प्रगट किया है क्या किसी को इसका पहिले पता था? मैं हूँ राधास्वामी दयाल। यह नहीं कि मुझे कोई सींग पूंछ लग गये हैं या किसी को तार सकता हूँ। नहीं! मैंने इस गुप्त ज्ञान को खोल दिया हैं जिसको पिछले सन्तों ने गुप्त रक्खा था। केवल संकेत या सैन बैन में कहा था। जिनके भाग्य में है वह समझ जायेंगे।

अब तुम कहोगे कि शब्द की रीति क्या है? शब्द अन्तर की आवाज है। बिना शब्द सुने तुमको ज्ञान नहीं होगा यद्यपि बुद्धि से तुम समझ जाओगे मगर क्रियात्मक जीवन का ज्ञान नहीं होगा।

सुरत को देह, मन और प्रकाश से परे एनरजी के पहिले स्थान में ले जाओ ताकि तुमको भान होजाय कि तुम कौन हो। तब तुम को अपने रूप का ज्ञान होगा और बेफिक्री आजायेगी। गुरु ज्ञान से और शब्द के सुनने से आदमी गुरु की बात को पकड़ने योग्य होता है यदि इसलिये कादरी साहब मेरी प्रशंसा करते हैं कि मेरा रूप उनके अन्तर प्रगट होता है तो वह गलती पर हैं। कादरी साहब सचाई के

जिज्ञासु थे। इनमें सचाई का माद्दा था। चूंकि कुदरत को हर एक की इच्छा का आदर करना पड़ता है इसलिये कानून कुदरत उसको वहां लेजाता है जहां से कि उसका काम बन जाय। यह है असली बात।

जीव काज स्वामी जग में आये।
भव सागर से पार लगाये ॥
तब दुखी जीव सुखरास हुआ ॥

भवसागर क्या है ? भव का अर्थ है अस्तित्व। जब तक तुम जीवन में हो तब तक दुख सुख तो रहेंगे ही लेकिन किसी को अधिक और किसी को कम, हुजूर महाराज ने एक जगह लिखा है—

शब्द दृढ़ाया सुरत चढ़ाई।
हम से जीवन लिया चढ़ाई ॥

हुजूर महाराज स्वयं इस खोज में थे। जिज्ञासुओं में थे। जिज्ञासुओं के लिये संत मत है लेकिन आज कल तो गुरु लोगों ने जीविका समझ कर सब को नाम देना आरम्भ कर दिया है। यह बिल्कुल गलत है और ऐसा नहीं होना चाहिये। नाम केवल अधिकारी जीवों के लिये है। शेष के लिये शिवसंकल्पमस्तु है। दुनियां का अनुभव हो जाने के बाद फिर तुम्हारा समय आयेगा। तब तुम सचाई की खोज करोगे।

तीन छोड़ चौथा पद दीना।
सत्त नाम सतगुरु गति चीन्हा ॥
अनुभव का आम विकाश हुआ ॥

यह तीन क्या हैं ? देह, मन और आत्मा। सुरत आत्मा नहीं है : सुरत के ऊपर जब प्रकाश आजाता है तब वह आत्मा कहलाती है।

जब वह प्रकाश से निकल कर अपने स्वरूप में लय होती है तब वह सुरत होती है। जब वह प्रकाश में से होती हुई संकल्प उठाती है तब वह मन कहलाती है। जब शारीरिक भान होता है तब वह

जीव कहलाती है। वस्तु एक ही है। जैसे जैसे उस पर खोल चढ़ते हैं वैसे ही खेल करती है। जब चौथे पद की समझ आ जाती है तब सतनाम और सतगुरु की अवस्था की असलियत मालुम होती है। यह क्या अवस्था है और मैंने इसको क्या समझा ? सतनाम मेरा अपना नाम है। मेरी अपनी एनरजी की आदि गति का नाम सतनाम है। मेरे अपने ही मन के दूसरे रूप का नाम सतगुरु है। जब समझ आ जाती है तो फिर सतनाम और सतगुरु दोनों के पंजे से छुटकारा मिल जाता है। कबीर ने कहा है :—

गुरु माथे से ऊतरे, शब्द विहूना होय।
ताको काल घसीट है, रोक सके न कोय ॥

जब गुरु माथे से उतर जाता है अर्थात् शब्द नहीं रहता तो काल अर्थात् मन मनुष्य को चक्र में डाल देता है।

गुरु माथे से ऊतरे, सिर से टली बलाय।
जैसा था वैसा भया, कहैं कबीर समझाय ॥

पहले हम निजस्वरूप में थे, यहां आगये और फँस गये। गुरु मिला और उसने बात समझा दी। ज्ञान होगया। अब न गुरु की आवश्यकता रही और न नाम की आवश्यकता रही। यह अन्तिम अवस्था निजस्वरूप में लय होने की है।

जग मग जोत होत उजियारा।
गगन सोत पर चन्द निहारा ॥ घट ब्रह्मरन्ध्र कैलाश हुआ।

जो आदमी इस रास्ते पर चलता है उसको अपने अन्तर में सूर्य, चन्द्रमा, तारागण दिखाई देते हैं। जब वह प्रकाश में पहुँच जाता है तो वह ब्रह्मरन्ध्र हो जाता है अर्थात ब्रह्म में पहुँच जाता है।

सेत सिंघासन छत्र विराजे।
अनहद शब्द गैब धुन गाजे ॥ हिया उमगा हर्ष हुलास हुआ ॥

जो आदमी शब्द और प्रकाश का साधन करता है उसको क्या मिलता है ? क्या वह ईश्वर बन जाता है ? जो गुरु अपने रोग को

दूर नहीं कर सकते वह दूसरों के रोग क्या दूर करेंगे ? यह सब धोखा है। आदमी को जो कुछ मिलता है उसके विश्वास का फल मिलता है। जब आदमी वहाँ पहुँच जाता है तो उसको आनन्द मिलता है। वहां उसको निश्चिन्तता आ जाती है। उसको वह स्वयं अनुभव करता है। जिस तरह काम की प्रसन्नता को तुम स्वयं ही अनुभव करते हो इसी तरह आत्मानन्द को भी तुम स्वयं ही अनुभव करते हो।

क्षर अक्षर निःअक्षर पारा।
विनती करे जहाँ दास तुम्हारा ॥ पृथ्वी छुटी गुजर अकाश हुआ ॥

क्षर कहते हैं नाशवान वस्तु को, स्थूल पदार्थ को। अक्षर है संकल्प अर्थात् सूक्ष्म और निःअक्षर नाम है कारण का। जब आदमी इन तीनों से परे चला जाता है तो वह अकेला होते हुये भक्तिमार्ग में रहकर अपने रूप की ओर खिचा रहता है अर्थात् शरणागतम् रहता है। उसमें वहाँ अहंकार नहीं आता। शब्द और प्रकाश में जाकर निजस्वरूप की ओर खिचाव रहता है। इससे आगे अभी मेरी पहुँच नहीं मगर कोशिश करता रहता हूँ। उससे आगे क्या होगा यह मालिक जानता है।

लोक अलोक पाऊँ सुखधामा।
चरण शरण दीजे विश्रामा ॥ राधास्वामी चरण निवास हुआ ॥

जो आदमी इस अवस्था में चला जाता है उसका लोक और परलोक बन जाता है। दाता दयाल जी की कृपा से मेरा तो बन गया। चूँकि बच्चे में 'मैंपना' नहीं होता इसलिये कुदरत उसकी हर तरह से सहायता करती है। ऐसे ही जो आदमी इस श्रेणी तक पहुँच जाता है कुदरत स्वयं उसकी सहायता करती है। जीवन रखते हुए उसमें न फँसना ही राधास्वामी धाम है। अर्थात् विदेह गति या जीवन मुक्त अवस्था राधास्वामी धाम है राधास्वामी धाम कोई ईंट

पत्थर का बना हुआ नहीं है। वह तो state of feeling of existance (अर्थात् अस्तित्व के बोध की अवस्था) है और वह तुम्हारी अपनी ही अवस्था है जिसको मैं राधास्वामी धाम कहता हूँ। हो सकता है संतों का राधास्वामी धाम कोई और हो।

ट्रस्ट वालो तथा दूसरे सज्जनो ! सिवाय शुभ कामना के मेरे पास और कुछ नहीं है। मैं सच्चे हृदय से चाहता हूँ कि तुम लोगों को खाने को रोटी, पहिनने को कपड़ा और रहने को घर मिले। सुख और शान्ति मिले तथा अन्त समय कोई कष्ट न हो।

सबको राधास्वामी !

सत्संग

परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज

(मानवता मन्दिर होशियारपुर १५-४-७२ सायं)

कैसे मैं आरति करूं तुम्हारी। महा मलिन साहब देह हमारी।
छूते से उपजा संसारा। मैं छूतिया गुन गाऊँ तुम्हारा॥
झरना झरे दसों दिस द्वारा। कैसे मैं आऊँ साहब निकट तुम्हारा॥
जो प्रभु देहु अमर की देही। तब हम हों साहब नाम सनेही॥
मलिया गिरि पर बसे भुअंगा। विष अमृत रहे एक ही संगा॥
तिनका तोड़ देहु परवाना। तब हम पाये साहब पद निरवाना॥
धनी धर्मदास कबीर बल गाजे। गुरु प्रताप आरती साजे।

धर्मदास कहते हैं कि मेरी देह मलिन है इसलिये मैं आप तक नहीं पहुँच सकता। देह क्या है ? एक तो यह शरीर है और एक मन के संकल्प हैं। जब तक कोई आदमी इस शरीर को और मन के संकल्पों को त्याग कर अर्थात् प्रकाश में नहीं जायेगा वह निर्वाण

को प्राप्त नहीं कर सकता। जो कुछ मैंने दो दिन के सत्संगों में कहा है निर्वाण के बारे में यह शब्द उसकी पुष्टि करता है। छूत के अर्थ हैं संस्कार और विचार। दसवें द्वार से संस्कार निकलते हैं। जब जब तक किसी का अपना आप स्थूल और सूक्ष्म को भूलेगा नहीं वह निर्वाण को प्राप्त नहीं कर सकता।

मुझे खुशी है कि मैंने निर्वाण के बारे में अपने सत्संगों में जो कुछ कहा अपने निज अनुभव के आधार पर कहा है। किसी की नकल नहीं की है और धर्मदास ने इसकी पुष्टि करदी है। सब सन्तों ने पर्दा रक्खा लेकिन मैंने इस रहस्य को खोल दिया। कल महात्मा तारा चन्द और कादरी बाबा ने जो कुछ कहा मेरे विषय में कहा और मेरी प्रशंसा की। यदि कोई और महात्मा मेरी जगह होता तो वह इन दोनों को अपने नाम के लिये अपना औजार या साधन बनाता लेकिन मेरा अन्तःकरण अनुचित लाभ उठाने की आज्ञा नहीं देता।

तुम्हारा अपना स्वरूप अजर है। तुम्हारा आत्मा अजर है मन और देह अजर नहीं हैं। यही सनातन धर्म की शिक्षा है। आजकल सनातन धर्म वालों को अपना पता नहीं है। मैंने कल प्रोफेसर वशिष्ठ जी से कहा था कि मैंने आप को यहां रौनक बढ़ाने के लिये नहीं बुलाया, इसलिये बुलाया है कि आप वशिष्ठ कुल से सम्बन्ध रखते हैं। जो शिक्षा वशिष्ठ जी की थी वही मेरी है और आप संसार को वही शिक्षा दिया करो। साथ ही अपना भी जन्म बनाओ।

झरना झरे दसों दिस द्वारा।
कैसे मैं आऊँ साहब निकट तुम्हारा ॥

जब तक हमारी सुरत दसवें द्वार अर्थात् कर्म और ज्ञानेन्द्रियों में से नहीं निकलती हमारा आगे जाने का सवाल ही पैदा नहीं होता। इसलिये जो यह कहते हैं कि हम पुस्तकें पढ़कर या गुरु बनकर आगे चले जायेंगे, यह असम्भव है। मैं स्वयं गिरता रहा। मैंने दातादयाल जी को मालिक समझ कर जेट भरी हुई थी। मैंने उनसे दुनियां कभी

नहीं माँगी थी। Love for the sake of love.(प्रेम के उद्देश्य से प्रेम करता था)। ताराचन्द तो यह मांगता है कि अमुक आदमी का लड़का ठीक हो जाय या अमुक आदमी इलैक्सन में सफल हो जाय।

जो प्रभु देहु अगर की देही।
तब हम हों साहब नाम सनेही॥

वह मालिक से अगर की देह मांगते हैं। अगर की देह तब होगी जब तुम ब्रह्म मय हो जाओगे। मैं चाहता हूं कि मेरे मिलने वाले सब पार हो जांय। मैंने पाप नहीं किये मगर मुझे काट छांट करने और खोज करने की आदत है यद्यपि मेरे मन में बुरे विचार भी आजाते हैं लेकिन मैं कोई बुरा काम नहीं करता।

मलिया गिरि पर बसे भुअंगा।
बिष अमृत रहे एक ही संगा॥
तिनका तोड़ देहु परवाना।
तब हम पाये साहब पद निर्वाना॥

इस संसार में चन्दन के वृक्ष के साथ सांप लिपटे रहते हैं अर्थात यहां विष और अमृत दोनों रहते हैं। परवाना जब प्रकास को देखता है तो अपने देह को मिटाकर उस प्रकाश में जाकर अपने आपको लय कर देता है। ऐसे ही जब तक ऐसी लगन नहीं है तब तक कोई आदमी इष्ट पद को प्राप्त नहीं कर सकता। तुमको परवाना बनना पड़ेगा, तब तुम प्रकाश रूप हो सकोगे। तुमको ब्रह्ममय या शब्द मय होना पड़ेगा, तब तुम निर्वाण को प्राप्त कर सकोगे। तुम लाख बाबा फकीर या बाबा सावनसिंहजी को या गुरु नानक को अपना इष्ट मानकर फिनाफिल शेख (लय) होजाओ, तुम अपने घर नहीं जा सकते।

धर्मदास कबीर बल गाजे। गुरु प्रताप आरती साजे॥

वह कहते हैं कि गुरु ने बल दिया अर्थात कबीर ने भेद

बताया, रास्ता बताया और साहस देकर खड़ा कर दिया। जब भेद पाकर तुम शरीर और मन को भूल जाओगे तब निर्वाणपद की प्राप्ति होगी।

सत्संग

परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज

(मानवता मन्दिर होशियारपुर १६—४—७२ प्रातः)

भजन बिन जीवन है निष्फल ॥
सृगा तृष्णा मारुथल भूमी, सारहीन निरजल ॥
काल करम माया बरपाई, फांसे जीव निरबल ॥
सँभल सँभल कर पग को धरना, कहीं न जाना फिसल ॥
भजन प्रताप बचे कोई प्राणी, शब्द के मारग चल ॥
राधास्वामी दीन सहाई, अपना दे निज बल ॥

किसी को क्या सत्संग कराऊँ। जीवन में बहुत सत्संग कराये हैं। मैं सत्संग कराते कराते थक गया मगर आप लोग सुनते सुनते नहीं थके। क्यों ? जो आदमी भजन नहीं करता वह अपने मन के विचारों को सत मानकर उनके पीछे ही दौड़ता रहता है। उसका सफर कभी समाप्त नहीं होता क्योंकि यह माया है। दातादयालजी ने इस शब्द में कहा है कि भजन के बिना जीवन निष्फल है। उन्होंने यह नहीं कहा कि सुमिरन ध्यान के बिना जीवन निष्फल है। सुमिरन ध्यान और है तो भजन और है। सुमिरन ध्यान करने वाले का जीवन निष्फल नहीं होता। वह तो किसी न किसी वस्तु के पीछे दौड़ता रहेगा। बात बहुत सूक्ष्म है। हर एक आदमी इसको समझ नहीं सकता। आपके अन्दर भिन्न-भिन्न प्रकार के विचार पैदा होते हैं और रूप बनते हैं। उनसे बातें होती हैं। यह क्या है ? यह तो

मृग तृष्णा है प्यासा हिरन चमकते हुये रेत को पानी समझ कर उसकी ओर दौड़ता है और दौड़ते दौड़ते थक कर मर जाता है मेरी भी मृग तृष्णा कीसी दशा रही है। मैंने भी यह सब मन के चक्कर में ही आकर किया है। अब समझ आई कि असलियत क्या है। तब से मुझे यह पता लगा कि मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रगट होकर उनकी हर तरह सहायता करता है और मैं नहीं होता तो मुझे यह निश्चय होगया कि मेरे अन्तर भी जितने रूप और रंग पैदा होते हैं यह हैं नहीं केवल छाया हैं। यही मृग तृष्णा है। सहसदल कँवल, त्रिकुटी, सुन्न, महासुन्न भँवर गुफा सब मृग तृष्णा है। इसमें सार नहीं है। जैसे महात्मा ताराचन्द ने अपने अन्तर में मेरा रूप देखा लेकिन मैं तो गया नहीं तो फिर ताराचन्द भूला हुआ है या नहीं ? राधास्वामी मत में जिन्दा गुरु की भक्ति है। गुरु की भक्ति क्या है ? उसके सत्संग में जाकर उसके बचनों को ध्यान से सुनना और उन पर क्रियात्मक होना या शब्द को सुनना।

किसी समय मेरे अन्तर भी मृग-तृष्णा आजाती है। चूंकि इसका ज्ञान हो चुका है इसलिये मैं इसमें फँसता नहीं। हमारे के सम्पूर्ण विचार मृग तृष्णा हैं। यह वास्तव में हैं नहीं। जैसे हिर रेत को पानी समझ कर उसकी ओर दौड़ता है ऐसे ही हम लोग भी अपने मन के विचारों के पीछे दौड़ते रहते हैं। यह सब क्या खेल है ? यह सब माया है।

मन के विचारों के पीछे दौड़ना ही जीवन का निष्फल होना है। यह जीवन सुफल कैसे बनाया जा सकता है ? भजन से अर्थात शब्द के सुनने से। सुमिरन ध्यान से तुम अपनी मृग तृष्णा को समाप्त नहीं कर सकते। हाँ, इनसे तुम्हारी इच्छा शक्ति (will power) बढ़ जायेगी और तुम्हारा मन काबू में आजायगा। तुम अपनी मृग तृष्णा को अपने अनुकूल बनाकर सांसारिक सुख प्राप्त कर सकोगे मगर इससे ऊपर जाने के लिये तुमको भजन करना पड़ेगा। मृगतृष्णा वहां जाकर दूर होगी जब मन नहीं होगा।

काल करम माया बर पाई फँसे जीव निर्बल ।

अब मैं अमरीका जा रहा हूँ। यह काल कर्म ही तो है जो मुझे अमरीका लेजा रहा है वर्ना मैंने कभी स्वप्न में भी अमरीका जाने का विचार नहीं किया। यह सब पिछले जन्म के कर्म भोग हैं। अब यदि मैं वहां जा रहा हूँ तो क्या किसी पर कोई अहसान कर रह हूँ ? अपना कर्म काटने जा रहा हूँ। क्या मेरे बचन सुनकर अमरीका वाले तर जायेंगे ? स्वामी विवेकानन्द अमरीका गये तो क्या कर आये और मैं जाऊँगा तो क्या कर आऊँगा ! काल कर्म का कर्जा सबको चुकाना पड़ता है।

सभल संभलकर कर पग धरना, कहीं न जाना फिसल ।

कर्म का चक्र चलता रहता है। यह मनुष्य के वश की बात नहीं है। यह जो कुछ भी हमारे और तुम्हारे साथ होता है यह सब पिछले जन्म का लेना देना है। तुम्हारे यहाँ लड़का पैदा होता है तो तुम खुशी मनाते हो। बड़े प्रेम से उसका पालन करते हो। हजारों रुपये उसकी शिक्षा और विवाह पर खर्च करते हो लेकिन वह आपकी आज्ञा नहीं मानता व आपकी सेवा भी नहीं करता। जरूरत के समय वह तुमको आर्थिक सहायता भी नहीं करता, तब तुम्हारा मन दुखी हो जाता है। ऐसा क्यों होता है ? यह सब प्रालब्ध कर्म का भोग है। जिससे तुमने लेना है वह हर हालत में ले लोगे। जिसका तुमको देना है वह देना पड़ेगा। यदि मनुष्य का भजन बन जाय तो फिर वह दुनियां के रंज व ग़म में डोलता नहीं और न हर्ष शोक का उसके दिमाग पर कोई प्रभाव पड़ता है क्योंकि वह उसको अपना कर्म भोग समझता है।

भजन प्रताप बचे कोई प्राणी, शब्द के मारग चल ।।

भजन की बड़ी महिमा गाई गई है क्योंकि भजन के प्रताप से आदमी ऊपर तक पहुँचता है। अब जब मैं अभ्यास में जाता हूँ तो सहसदलकंवल, त्रिकुटी, सुन्न, महासुन्न, भवरगुफा को मृगतृष्णा समझकर इनसे आगे चला जाता हूँ। सन्तों ने तीन देश बताये हैं—

माया देश, काल देश और दयाल देश। इनसे परे है निज स्वरूप। सहसदलकंवल से लेकर भंवरगुफा तक की अवस्थाओं में विचार उठते रहते हैं। द्वैतवादी और अद्वैतवादी भी माया में फँसे हुये हैं। दाता-दयालजी का कथन है कि सब भूल गये। सन्तों का मार्ग बहुत ऊँचा है।

घईसाहब ! तुमको समझा देना चाहता हूँ कि यह चिन्ता मत किया करो कि तुमको अन्तर में सूर्य चन्द्रमा और तारागण दिखाई नहीं पड़ते। यह तो सब माया है असली वस्तु तो शब्द है, उसको पकड़ो। महासुन्न तक माया देश है। दसवें द्वार से आगे काल देश है। वहाँ प्रकाश है। यही प्रकाश रचना करता है। कई आदमी कहते हैं कि हमें अन्तर में प्रकाश दिखाई नहीं आता। न सही। असली वस्तु शब्द है, उसको सुनने की कोशिश करो। मगर जिनको संसार की चाह है उनके लिये यह मार्ग नहीं है। उनके लिये केवल सुमिरन ध्यान है। इससे तुम्हारी दुनियां अच्छी बन जायगी। जो आदमी शान्ति चाहता है उसके लिये भजन है। यदि हिरन को यह मालुम हो जाय कि कस्तूरी उसके अपने ही अन्तर है तो वह क्यों दौड़ दौड़कर अपनी जान गंवाये। इसी प्रकार जब मनुष्य को यह विश्वास हो जाता है कि जो कुछ है सब उसके पास अपने ही अन्तर है तो फिर वह बाहरमुखी से अन्तरमुखी होकर अपने ही अन्तर में उसकी खोज करता है। जाग्रत अवस्था में तो मैं अपने विचारों को कन्ट्रोल करता रहता हूँ लेकिन स्वप्नावस्था में कभी-कभी यह विचार नहीं रहता कि यह स्वप्न है। तुम देखो तुम्हारे मन में हर समय कोई न कोई विचार आता है। यह भजन से कंट्रोल होगा। शब्द योग हमारे स्वरूप (Self) को सुराब से बचाने के लिये है। दुनियां-दारों को चाहिये कि वह केवल एक का सहारा लें। चाहे राम पर विश्वास रक्खें चाहे कृष्ण पर। चाहे गुरु पर या किसी देवी देवता पर लेकिन केवल एक का विश्वास और सहारा हो। अगर आज राम पर विश्वास है और कल कृष्ण का सहारा लेते हो तो इससे

तुमको कोई लाभ नहीं होगा क्योंकि तुम्हारा विश्वास एक जगह नहीं है। नित्यप्रति अपना इष्ट बदलना यह प्रगट करता है कि तुम्हारा विश्वास कहीं भी नहीं है। जब विश्वास ही न हो तो मिलेगा क्या ? दातादयाल जी का शब्द है :—

सजन कोई साँच बात न कहे ॥
योग आचार योग रस माते, क्षणिक ज्ञान छिनभंगी ।
मध्यम वाले मध्य समाने, सून्यवाद सरभंगी ॥
सांख्य गिनावे गिनती सबकी, योग समाधि गावे ।
वेद अन्त वेदान्त की आसा, कर्म में कर्मी फँसावे ॥
जैसी मन की भई कल्पना, तैसा खेल खिलाया ।
खटपट में षट दर्शन भूले, अन्त मिला क्या छाया ॥
पूरा खेल किसी का नाहीं, खेलें खेल खिलाड़ी ।
किसको बताऊँ पंडित मूरख, किसको ज्ञानी अनाड़ी ॥
गुरु की दया साध की संगत, सार तत्व लख पाया ।
राधास्वामी चरण कमल गह, छूटी माया छाया ॥

साधु की संगत और गुरु की दया से मैंने सारतत्व पाया है। सारतत्व पाने के बाद इसको मैंने पब्लिक में प्रगट कर दिया है। दूसरे महात्माओं ने क्या पाया यह उनको मालुम होगा। यदि उन्होंने कुछ पाया तो उसको छिपाया। यदि कुछ बताया तो संकेत या सैन बैन से काम लिया। मैंने स्पष्ट करके कह दिया। माया के परे जब सुरत शब्द में लय हो जाती है तब सार तत्व का ज्ञान होता है। शब्द ही आदि है और शब्द ही अन्त है।

सुमिरन ध्यान करना या अन्तर में गुरु का रूप आ जाना यह भजन नहीं है। यह तो माया और काल में रहते हुये माया और काल को अपने अनुकूल बनाने का एक साधन है। चूँकि इससे तुम्हारा मन कंट्रोल में आ जायेगा, इसलिये इससे तुम अपनी दुनियां को बहतर बना सकते हो मगर इस दुनियां से निकल नहीं सकते। क्यों ?

सुमिरन कहते है किसी बात को बार-बार याद करने को। किसी ने माँ को याद किया, किसी ने बाप को याद किया, किसी ने भाई या बच्चों को याद किया और किसी ने गुरु को याद किया। क्या अन्तर है ? सुमिरन से या ध्यान से मन वश में आता है चाहे किसी का भी ध्यान करो। माया और काल के चक्र से निकलने को शब्द है।

काल कर्म माया बरपाई, फांसे जीव निरबल।
संभल संभल कर पग को धरना, कहीं न जाना फिसल ॥

जो काम भी करो सोच समझ के साथ करो। किसी प्रयोजन के बिना कोई काम न करो।

भजन प्रताप बचे कोई प्राणी, शब्द के मारग चल।
राधास्वामी दीन सहाई, अपना दे निजबल ॥

पूर्ण गुरु क्या है ? गुरु के वचन सुनकर समझकर और उन पर अमल करने से तुम्हारी बुद्धि निश्चल होगी और तुमको उत्साह मिलेगा। इस उत्साह का नाम है गुरु बल। तुम लोग मेरे पास आते हो। मेरी बात को समझने से तुमको बल मिलेगा और उत्साह मिलेगा। दुनियां यह समझती है कि गुरु लोगों को बल देता है। बल तो तुमको स्वयं ही मिलेगा बशर्ते तुम उसकी बात को समझकर उस पर अमल करो। अबला पति का बल लेती है। कैसे ? यदि कोई उसको बुरा भला कहता है या उसे कोई कष्ट होता है तो वह अपने मन में यह सोचती है कि जब पति घर में आयेगा तो उससे कहूँगी। केवल इतनी बात से ही उसके मन का बोझ हलका हो जाता है। इसी का नाम पति बल है। यह विश्वास हो जाना कि मालिक जो कुछ करता है हमारे हित के लिये करता है यह सबसे बड़ा बल है लेकिन यह विश्वास करना हर एक आदमी के वश में नहीं है।

Registered No. L.

महर्षि शिवव्रतलाल कृत हिन्दी पुस्तकों की सूची

सम्पूर्ण महारामायण सजिल्द	६)	ओ३म् नाविल	२.२५
श्रीमद्भगवद्गीता भाग १–२	२.५०	झलकदार मोती	२.००
नानक योग ३ भाग सजिल्द	४)	गिरहदार मोती	१.००
राधास्वामी योग ६ भाग सजिल्द	५)	शाहवार मोती	१.२५
कबीर योग प्रथम भाग	२)	रंगदार मोती	२.००
" " द्वतीय "	१.७५	दलदार मोती	२.७५
" " तृतीय "	१.५०	कजदार मोती	२.००
शरणागति योग	.७५	शिवजी की अद्भुत कहानी	१.५०
उपासना योग	.७५	चमकदार मोती	२.००
कर्म योग	.७५	आदर्श भारतीय नारियाँ	१.००
आनन्द योग प्रकाश	२.५०	फकीर भजनावली	१.००
Light on Anand yog	.३)	शब्द गुन्जार भाग १,२,३	३.५०
आत्मिक प्रायमर	.५०	शब्दों का गुटका	०.५०
कबीर आद्यज्ञान प्रकाश	२.००	नन्दू भाई की साखी	१.२५
पंथ सन्देश	३.००	कबीर गूढ़ शब्द व्याख्या	१.००
कथा कल्पद्रुम	१.००	कबीर शब्दावली	.७५
सप्ताह विचार	१.५०	नैयर आजम प्र०भा०	१.५०
शाही पति परायण	१.००	सत कबीर की साखी	१.७५
शाही भूत	१.००	पिंगल साखी	.६०
शाही डाकू	१.७५	स्वास्थ्य और भोजन	१.००
शाही लकड़हारा	२.६०	रा०स्वा०मतप्रकाश वचनसार	१.००
शाही जादूगरनी	२.५०	जीवन सुधार	१.२५
शाही भिखारी	२.६०	अनमोल उपदेश	१.००
ाबदार मोती	१.७५	विचार दर्पण	१.००
ताबदार मोती	२.५०	विचारशक्ति अथवा मनोविज्ञान	१.५०
आत्मिक उत्कर्ष	१.००	बिचारांजलि	१.५०

शिव साहित्य प्रकाशन मण्डल कार्यालय—'शिव'

स्ट दयालनगर, अलीगढ़(उ०प्र०)लेखराज नगर, अलीगढ़(उ०प्र०)

ीशचन्द्र मीतल द्वारा दयाल प्रिन्टिंग प्रेस, लेखराज नगर, अलीगढ़ में मुद्रित

Regd. No. A—808

ग्राहक सं० ______

श्रीमान् ______

______

______

सम्पादक व प्रकाशक—
देवीचरन मीतल
लेखराज नगर,
[illegible]

Printed by S.C. Mital, Dayal Printing Press, [illegible]